पुस्तक : हेम की हसित लहरें

संकलन-संपादन : साध्वी हेमप्रभाजी

प्रकाशक : मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन
पीपलिया बाजार
ब्यावर [राजस्थान] 305901

प्रथम संस्करण : वी० नि० सं० २५१७
ई० सन् १९९१

मुद्रक : ताराचन्द पालड़िया
विद्या प्रिन्टर्स, ब्यावर (राज०)

मूल्य : आठ रुपये

प्रकाशकीय

मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन ने साहित्यिक क्षेत्र में गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित किये हैं। यह तभी संभव हुआ कि साहित्य के नाम पर जैसा-तैसा कुछ भी प्रकाशित नहीं करके प्रवचन, उपाख्यान, कथा, काव्य, चरित्र आदि विधाओं द्वारा धर्म, दर्शन, नीति, आचार-विचार के सिद्धान्तों की सरल, सुबोध भाषा में व्याख्या करने वाले सत्साहित्य का प्रकाशन किया।

अब इसी सत्साहित्य-प्रकाशन की श्रृंखला में "हेम की हसित लहरें" नामक एक और कड़ी जुड़ रही है। मुख्य रूप में यह भक्तिरस से ओत-प्रोत गीतों का संकलन है।

विदुषी साध्वी श्री हेमप्रभाजी म. ने गीतों का संकलन किया है। गीतों के बोल और राग इतने सरल, सरस, मधुर हैं कि पाठक सहज ही गुन-गुनाने के लिए प्रेरित होंगे। भक्तिप्रधान गीतों में श्रद्धेयों के प्रति श्रद्धा-पुंज समर्पित करने के साथ गुणानुवाद करते हुए अपने उल्लास आदि मनोभावों को अभिव्यक्त किया है। उद्‌बोधन और उपदेश प्रधान गीतों में सांसारिक प्रलोभनों का दिग्दर्शन कराते हुए उनसे विरत होने की सीख दी है। मानव को उसके जीवन का उद्देश्य समझाते हुए सफलता प्राप्ति के सूत्रों का संकेत किया है। जाने-अनजाने दुर्व्यसनों की ओर बढ़ते हुओं को उनके दुष्परिणामों से चेताया है। मन को वश में करने के उन सुगम उपायों का उल्लेख किया है, जिनका दैनंदिनी क्रिया-कलापों में समावेश करने पर जन से सज्जन बना जा सकता है, इत्यादि।

संक्षेप में कहा जाये तो साध्वीजी ने अपने इस लघु संकलन

में गागर में सागर भरने के सदृश वह सब समाविष्ट कर दिया, जो मानव को सही मायने में मानव कहलाने के योग्य बनाता है।

एतदर्थ साध्वीजी धन्यवादार्ह हैं। उनका प्रयास स्तुत्य है, सराहनीय व अभिनन्दनीय है। हमारी आकांक्षा है कि साध्वीजी उन विस्मृत होते जाते धार्मिक उपदेशप्रधान लोकगीतों का संकलन करनें का प्रयत्न करेंगे, जो भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

आशा है संगीतप्रेमी पाठक और गायक बंधु प्रस्तुत संकलन से लाभान्वित होंगे। अन्तर्जागरण की प्रेरणा प्राप्त करेंगे तो साध्वीजी को अपनी प्रतिभा का बहुआयामी विकास करने और संस्था को ऐसा साहित्य प्रकाशित करने में सहयोगी बनेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

कोई त्रुटि रही हो तो पाठकगण सुधारने की कृपा करें।

उत्तमचन्द मोदी
मंत्री
मुनिश्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, ब्यावर

★★★

समर्पण

जिनका पवित्र जीवन त्याग और वैराग्यमय है, जिनकी सत्‌शिक्षा
ने मुझे त्याग एवं साधना पथ पर बढ़ने की पवित्र प्रेरणा
दी है, जिनका व्यक्तित्व ध्यानोत्कर्षमय है—ऐसी
निर्विकार-निर्मल-व्यक्तित्वशीला, महायोगेश्वरी,
प्रखर तेजस्विनी, विपुल प्रभावशीला, विद्या-
आराधयित्री, प्रज्ञानिष्ठ, तपोनिष्ठ,
परमादरणीया, अभिवन्दनीया, मातृ-
स्वरूपा, मम सद्‌गुरुवर्या, श्रद्धेया

श्री उमरावकुंवरजी म. सा. अर्चना

के कर-कमलों में सादर
सस्नेह सविनय सश्रद्धा
सभक्ति समर्पित.

—साध्वी हेमप्रभा

★★★

आशीर्वचन

प्रस्तुत पुस्तक "हेम की हसित लहरें" पाठकों के समक्ष है। इसमें हिन्दी, पंजाबी, गुजराती, मारवाड़ी आदि भाषाओं में रचित जिज्ञासुओं के पढ़ने हेतु आध्यात्मिक पद संगृहीत हैं।

साध्वीजी हेमप्रभाजी ने अध्ययनरत रहते हुए भी "मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन" के मंत्री श्री उत्तमचन्दजी मोदी के आग्रह से उनकी भावना का आदर करते हुए अत्यन्त अध्यात्म-रस से ओत-प्रोत स्तवनों का संग्रह किया है।

साध्वीजी ने थोड़े ही समय में आगमों का, साहित्य एवं संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं का अच्छा अध्ययन किया है। समय-समय पर अपनी रचनायें भी बनाती रहती हैं।

संतोष एवं प्रसन्नता का विषय तो यही है कि साध्वीजी सम्पन्न कुल से छोटी उम्र में साधनापथ पर अग्रसर हुईं और अपने ज्ञानाभ्यास एवं संयमसाधना में सतत जागरूक रहती हैं।

भविष्य में भी ज्ञानाराधना के साथ-साथ परमार्थ हेतु अपनी रचनाओं तथा संपादन-संकलन के माध्यम से अपना योगदान देती रहेंगी, ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास एवं स्वान्तःकरण से आशीर्वचन है।

–साध्वी उमरावकुंवर "अर्चना"

अभिमत

सुर-ताल-लयानुगत गीत आत्मा का नाद है। जिसकी सुखानुभूति गायक और श्रोता को समान रूप में होती है। यही कारण है कि गीत-परम्परा अतीव प्राचीन है और साहित्य का वहुभाग छन्दोवद्ध है।

"हेम की हसित लहरें" गीतों का सुन्दर, सलौना गुलदस्ता है। संकलित गीत भक्तिरस से ओतप्रोत हैं और उनका सस्वर पाठ उस प्रसंग का साकाररूप उपस्थित कर देते हैं।

इसका श्रेय साध्वी श्री हेमप्रभाजी को है। गीत रचना एवं गान के प्रति आपकी साहजिक अभिरुचि है। इसी कारण वे अपने इस लघु संकलन में प्रसादगुणोपत गीतों के संचयन करने में सफल हुई हैं। उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है। संकलित गीतों के गुन-गुनाने से पाठकों को आनन्दानुभूति होगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

साध्वी श्री हेमप्रभाजी का वैदुष्य श्लाघनीय है तथा मणिकांचनसंयोगवत् मालवज्योति, काश्मीरप्रचारिका, अध्यात्मयोगिनी, प्रकाण्डपंडिता साध्वी श्री उमरावकुंवरजी म० सा० के मार्गदर्शन एवं कुशल नेतृत्व में प्रगति कर रही हैं। यह हम सभी के लिए तोष का विषय है।

अंत में हम पुनः पुनः साध्वीजी के श्रम की सराहना करते हैं। हमारी मंगलकामना है कि उनका भविष्य अधिकाधिक समुज्ज्वल एवं यशस्वी बने।

—मुनि विनयकुमार 'भीम'

स्वकीय

गुजरात की महानगरी अहमदाबाद चातुर्मास के पूर्व "मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन" के मंत्री श्री उत्तमचन्दजी सा. मोदी अपने परिवार सहित परमपूज्या काश्मीरप्रचारिका, प्रवचन-शिरोमणि, मातृ-स्वरूपा श्रद्धेया गुरुवर्या श्री उमरावकुंवरजी म. सा. "अर्चना" आदि ठाणा के दर्शनार्थ आये ।

पूज्य गुरुणीजी म. सा. श्री एवं मंत्रीजी के बीच संस्था विषयक चर्चा के दौरान संस्था द्वारा स्तवनों की पुस्तक प्रकाशित हो, ऐसा मंत्रीजी ने सुझाव रखा। उस समय मैं पू. म. सा. के निकट ही बैठी चर्चा सुन रही थी । पू. म. सा. श्री ने मेरी स्तवन-रुचि को दृष्टिगत रखते हुए मुझे स्तवनों के संकलन हेतु आज्ञा फरमाई ।

मैंने आज्ञा को शिरोधार्य कर स्तवनों का संकलन प्रारम्भ किया ।

श्रद्धेय सद्गुरुवर्या श्री के शुभ-आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से तथा मेरी अग्रज गुरुबहिनों के सहयोग व प्रेरणा से इस संकलन के प्रथम प्रयास में समर्थ हो सकी हूँ ।

हिन्दी, मारवाड़ी, पंजाबी, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं में स्तवनों का यह संग्रह है । जिसका पू. गुरुवर्या श्री ने "हेम की हसित लहरें" नाम देकर मुझे प्रोत्साहित किया है ।

यद्यपि इसमें शुद्धता का पूर्ण ध्यान रखा गया है, तथापि कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठकगण सुधार कर पढ़ें ।

श्रोता एवं पाठक इससे लाभ उठायेंगे, इसी आशा के साथ—

"अर्चना" शिष्या—

साध्वी हेमप्रभा

संक्षिप्त परिचय—

महासतीजी श्री हेमप्रभाजी

"यदि सन्ति गुणाः पुंसां, विकसन्त्येव ते स्वयम् ।
नहि कस्तूरिकाऽऽमोदः शपथेन विभाव्यते ।।"

अर्थात्—

यदि पुरुष में गुण हैं तो वे स्वयं ही विकसित हो जाते हैं। कस्तूरी की सुगन्ध को प्रमाणित करने के लिए शपथ खाने की आवश्यकता नहीं होती।

इसी प्रकार विश्ववंद्य प्रभु महावीर के पुनीत शासन में साधकों की बहुत लम्बी परम्परा रही है। जिनके सद्गुणों की सौरभ से सारा संसार सुवासित है। उसी परम्परा में हमारे श्रद्धेय चारित्रचूडामणि, मरुधरा-मंत्री पूज्य स्व. स्वामीजी श्री हजारीमलजी म. सा., संयम का पावन पथ बतलाने वाले शासन-सेवी उ. प्र. स्व. पू. स्वामीजी श्री ब्रजलालजी म. सा., श्रमण-संघीय युवाचार्य, ज्ञानयोगी, बहुश्रुत पं. रतन स्व. पू. श्री मिश्रीमलजी म. सा. "मधुकर" भी आते हैं।

उन्हींकी अन्तेवासिनी, अध्यात्मयोगप्रवरा, शासनचन्द्रिका, वात्सल्यसिन्धु, काश्मीरप्रचारिका, विदुषीवर्या पू. गुरुवर्या श्री उमरावकुंवरजी म. सा. "अर्चना" की सुशिष्या एवं मेरी लघु गुरुवहिन साध्वी श्री हेमप्रभाजी ने इस "हेम की हसित लहरें" नामक पुस्तिका का संकलन एवं सम्पादन किया है।

आर्या श्री हेमप्रभाजी स्वभाव से अध्ययनशीला, जिज्ञासु

एवं मूक सेवाभावी हैं। आपने पाथर्डी बोर्ड से धार्मिक परीक्षा "सिद्धान्त प्रभाकर", प्रयाग से साहित्यरत्न एवं हायर सेकण्डरी १० + २ की परीक्षा अच्छे नम्बरों से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। वर्तमान में बी. ए. का अध्ययन कर रही हैं।

आपका जन्म मद्रास के सुप्रसिद्ध सेठ श्री मांगीलालजी सा. चोरडिया की धर्मपत्नी श्रीमती मनोहरदेवी की पावन कुक्षी से दि. ५-२-६६ को हुआ। दो वर्ष वैराग्यावस्था में रहने के पश्चात् माता-पिता एवं परिवार वालों की अनुमति से दि. २-२-८३ के शुभ दिन नोखा चांदावतां में स्वामी जी श्री ब्रजलालजी म. सा. एवं पूज्य युवाचार्य म. सा. के मुखारविंद से दीक्षा (सम्पन्न हुई) ग्रहण की।

आप अध्ययन के प्रति पूर्ण जागरूक हैं। आठ आगम एवं १०० (सौ) थोकड़े, ढालें आदि कंठस्थ हैं। स्तवन बनाने एवं गाने की भी आप में रुचि है। स्वयं भी रचना करती रहती हैं।

जैन साहित्य की अनेकानेक विधाओं में संगीतमूलक रचनाओं का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है।

"सद्यः प्रीतिकरो रागः" जो कहा गया है, वह केवल वाचिक अलंकृति नहीं अपितु यथार्थ है। संगीत में हर किसी का सहज अनुराग होता है तथा आत्मतन्मयता का भाव भी इससे परिपुष्ट होता है। जैन साहित्यकारों ने जन-जन द्वारा सहज रूप में समझा जा सकने योग्य गीतसाहित्य बहुत रचा है।

हिन्दी, मारवाड़ी, गुजराती, पंजाबी आदि विभिन्न भाषाओं में स्तवनों का जो संकलन साध्वी श्री हेमप्रभाजी ने किया, उनका

अपना विशिष्ट स्थान है। साधु-साध्वीवृन्द एवं जिज्ञासु इनका गान कर सकते हैं।

मुझे यह देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आत्मश्रेयस् के साथ-साथ जनकल्याण के पावन कार्य में सन्निरत साध्वी श्री हेम-प्रभाजी ने स्तवनों का संकलन, सम्पादन कर "हेम की हसित लहरें" तैयार की है, जो धर्मानुरागियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी।

साध्वीजी ने लगन एवं अभिरुचि के साथ सुन्दर संचयन किया है। इसके लिए वर्धापनीय हैं। इनकी यही अभिरुचि, सत्प्रयास सदा बढ़ते रहें, इसी शुभकामना के साथ—

साध्वी डॉ. सुप्रभा "सुधा"

साध्वी श्री हेमप्रभा जी

हेम की हसित लहरें

मारवाड़ी-विभाग	१–४०
हिन्दी-विभाग	४१–८४
गुजराती-विभाग	८५–१०६
पंजाबी-विभाग	१०७–१२४
अंग्रेजी-विभाग	१२५–१२९

हेम की हसित लहरें

मारवाड़ी-विभाग

हेम की हसित लहरें

[मारवाड़ी विभाग]

卐 पार्श्वनाथ-स्तुति 卐

(तर्ज:—तुमको लाखों प्रणाम...............)

पारस पुरुषादानी, तुमको लाखों प्रणाम २ ।
जग-जीवन दिल-जानी, तुमको लाखों प्रणाम २ ।।टेर।।

दसवें देवलोक से आये, जन्म बनारस नगरी पाये ।
सब जीवों के सुख-दानी, तुमको लाखों...............।।१।।

कलिमल हरण करण सुख साता, दुनिया के हो शिवसुख-दाता ।
भवि की भ्रमणा भानी, तुमको लाखों...............।।२।।

धीरज धर शुभ ध्यान लगावे, चिन्तामणि से जो चित्त लावे ।
वस्तु मिले मनमानी, तुमको लाखों...............।।३।।

कर दे लोह जड़ पारस कंचन, तू चेतन पारस चिंतामण ।
करो मेहर मुझ कानी, तुमको लाखों...............।।४।।

नाग आग से आप उवार्या, नमो नाथ नवकार उचार्या ।
दया खूब दिल आनी, तुमको लाखों...............।।५।।

चौराणु महामन्दिर आया, "युवक मंडल" हित तवन बनाया ।
"मुनि भैरव" अगवानी, तुमको लाखों...............।।६।।

***

卐 प्रभु महावीर 卐

(तर्ज—तावड़ा धीमो-सो पड़ जा रे..............)

चांदनी फीकी-सी पड़ जावे, चमक तारां री उड़ जावे।
म्हारा महावीर रा तेज सामने, सूरज शरमावे ।।टेर।।

त्रिशलादे रा लाडला जी, सिद्धारथ रा लाल। वीरजी २
गर्भ ग्रांवता रतन बरसिया २, दुनिया हुई निहाल।
चांदनी फीकी-सी पड़ जावे.............. ।। १ ।।

एरावत चढ़ इन्द्र आवियो, जनम लैवता पाण। वीरजी २
पाण्डुशिला पर न्हवण करायो २, शक्ति अलौकिक जाण।
चांद्रनी फीकी-सी पड़ जावे.............. ।। २ ।।

ओ संसार असार जाण कर संजम लीन्हो धार। वीरजी २
भरी जवानी दीक्षा लेकर २, कीयो धर्म प्रचार।
चांदनी फीकी-सी पड़ जावे .... ।। ३ ।।

केवलज्ञान उपावियोस जी, घाति करम ने जीत। वीरजी २
समवसरण की सोभा भारी २, सुर नर गावें गीत।
चांदनी फीकी-सी पड़ जावे.............. ।। ४ ।।

कार्ति-वद अमावस शुभ दिन, मोक्ष पधार्‍या आप। वीरजी २
दीया दीपें दीवाली घर-घर २, अनूप थांरी छाप।
चांदनी फीकी-सी पड़ जावे.............. ।। ५ ।।

***

卐 जय-गान 卐

(तर्ज:—कद आवेला सांवरिया ....)

सुयश गावां रे सकल मिल आज,
जयमल्ल गणिवर की ।। टेर ।।

महिमाशाली मरुधर मांही, गाँव लाम्बिया जान ।
मोहनदास तास घर नारी, महिमादे मतिमान ।।
जयमल्ल..............।। १ ।।

शुभ वेला में जन्म लियो जद, हर्ष भयो अनपार ।
स्वजन परिजन महोत्सव कीनो, सधवा गाया मंगलाचार ।।
जयमल्ल..............।। २ ।।

पढ-लिखकर पारंगत हो ग्या, परणी लाछां नार ।
भूधर पूज्य पै संयम लेकर, छोड्यो लाछां को नवलो प्यार ।।
जयमल्ल..............।। ३ ।।

सोलह वर्ष एकान्तर कीना, पाँच विगय परिहार ।
वर्ष बावन सोये नहीं स्वामी, ऐसे थे जय अणगार ।।
जयमल्ल..............।। ४ ।।

जो ध्यावे वांछित फल पावे, जपे पूज्य को जाप ।
निश्चय मन से कहे "अर्चना" कट जावे कोटी भव के पाप ।।
जयमल्ल..............।। ५ ।।

卐 गुरु-गुणगान 卐

(तर्ज:—वाजरां री पाणत..............)

स्वामीजी महाराज रा, गुण नित गावजो ।
'क' प्यारो लागे नाम हजारी, सुबे शाम ध्यावजो ।।टेर।।

गुणां रा सागर भर्या, ज्ञान रा मोती ।
'क' चारों संघ में जगी रे जगमग - जगमग ज्योति ।।१।।

महावीर रो सन्देशो, सुनावा आविया ।
'क' भव्य जीवां ने सन्मार्ग ऊपर आप लाविया ।।२।।

संयम निर्मल पालीयो, आतमा तारी ।
'क' अमर बनग्या हो स्वामीजी, गांवा गीत भारी ।।३।।

व्रज मुनिश्वर ताज, मोटा उपकारी ।
'क' लगती मधुकरजी महाराज री, सूरत प्यारी ।।४।।

नाम री फेरां हो माला, आनन्द आवे ।
'क' मन चिन्त्यां रे मनोरथ सारा फल जावे ।।५।।

हजारां में एक हजारी, नाम ले लीजो ।
'क' भाव भक्ति सूं "रसिक" गीत गाय लीजो ।।६।।

卐 श्रद्धा-सुमन 卐

(तर्ज:—नखरालो देवरियो..............)

जिन - शासन रा शृंगार, गुरुवर गुणधारी ।
जन-जन रा वे हियहार, गुरुवर यशधारी ।।टेर।।

जन्म पाया तिवरी शहर में, हो ग्या जग - विख्यात ।
पिता आपरा जमुनालालजी, तुलसां देवी मात ।।
घर-घर में खुशी अपार....... .....।।१।।

गुरुवर जोरावर ने पाकर, आप हुया निहाल ।
गुरु भाई हजारीमलजी, स्वामीजी ब्रजलाल ।।
हा सद्गुण रा भण्डार ....।।२।।

चारों संघ में छाई खुशियाँ, युवाचार्य ने पाकर ।
अधबीच मांही स्वर्ग सिधाया, शहर नासिक में जाकर ।।
दुःख पीड़ा-रो नहीं पार..............।।३।।

हिन्दू मुस्लिम जैन सभी सिख, सादर शीष झुकावे ।
"हेमप्रभा" श्रद्धा भक्ति से, भाव-सुमन चढावे ।।
वन्दन हो सौ-सौ बार..............।।४।।
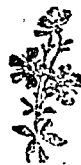
卐 अर्चना-जयंती 卐

(तर्ज—ब्याव बींदनी...............)

जन्म - जयंती आज मनावां, अर्चनाजी गुरुराज री ।
मिल-जुल करने सब गुण गावां, गुरुणीजी महाराज जी ।।टेर।।

जन्मभूमि है गांव दादिया, माँ अनुपा री लाडली ।
मांगीलालजी तात आपरा, आशा मन री सारी फली ।।
घर-घर में हैं बँटे वधाइयां, खुशियाँ छाई आज जी.......... ।।१।।

तेरह वर्ष री उमर में ही, सुहाग छीन्यो काल जी ।
भर यौवन में वैभव छोड्या, तोड्या मोह जंजाल जी ।।
संयम लेइने, परिषह सहने, सार्या आतम काज जी.......... ।।२।।

काश्मीर पंजाब हिमाचल, गुजरात मध्यप्रदेश जी ।
दूर-दूर गामां नगरां में, दीयो धर्म उपदेश जी ।।
राजस्थान में गूँज रही है, अहिंसा री आवाज जी.......... ।।३।।

धीर-वीर गंभीर गुणाकर, गुण रत्नां री खान जी ।
सरल स्वभावी मौन तपस्वी, जिनशासन री शान जी ।।
वाणी सूं अमृत बरसै है, बखान रयो गाज जी.......... ।।४।।

वर्षगांठ पर आ ही कामना, लम्बी पाओ आप उमरिया ।
"हेम" केवे माफ करजो गल्ती, मैं हूँ थांरा टाबरिया ।।
होय गयो है धन्य आज तो, सकल जैन समाज जी.......... ।।५।।

※
※※

卐 तपस्या कर लीजो 卐

(तर्ज—बाजरा री पारणत...............)

मुगतपुरी में जाणो व्हे तो, तपस्या कर लीजो।
'क' म्हारो केणो माणो भाई बहिना, आज सुण लीजो ।।टेर।।

खातां खातां ऊमर थारणी, बीत गी सारी।
'क' नहीं धापणो आयो रे, केऊँ इन वारी.......।।१।।

तपस्या करता जीवड़लो, मुगत्या में जावे।
'क' सांची केऊँ ओ साथीड़ा, घणो सुख पावे.......।।२।।

काम क्रोध सु होवे मैली, भोली आतमा।
'क' पाछी तपस्या रूपी नीर में, थां धोलो आतमा.......।।३।।

लाडू, जलेबी, गुलाबजामुन, खादा मोकला।
'क' खादा भुज्या मरमरी, सीयाला में दाल ढोकला ....।।४।।

घणी तरे री चीजां जग में, मन में जान ल्यो।
'क' लेवो "रसिक" रसना जीत, म्हारी केणी मान ल्यो...।।५।।

卐 मौजीराम की मौज 卐

(तर्ज—आयो आयो...............)

देखो देखो माल मसाला नित खावे रे,
खुशियाँ तो मनावे मौजीरामजी ।।टेर।।

अजमेर को सोहन हलवो, जयपुर मिश्रीमावो रे।
रसगुल्ला मंगावे बीकानेर का ।।१।।
नयासहर की तिलपट्टी, और फीणी पाली वाली रे।
पेठा तो चावे रे आगरा शहर का ।।२।।
मावा की कचोरी मीठी, जोधपुर सु आवे रे।
पूड़ियां तो मंगावे सरवाड़ की ।।३।।
कलाकन्द तो नाथद्वारा, भुजिया माधोपुर का।
सेवां तो मंगावे रतलाम की ।।४।।
मोतीचूर तो मदनगंज को, घेवर बढ़िया ताजा रे।
इमरत्यां मंगावे भीलवाड़ा से ।।५।।
खाता खाता बिगड्यो हाजमो, पेचिश ज्याने हो गई रे।
दस्तां तो लागे रे दिन रात की ।।६।।
सभी दांत गिरबा लाग्या, मूंडो हो ग्यो खाली रे।
चिड़ियाँ रो दीखे रे जिस्यां घोंसलो ।।७।।
धन भी खर्च्यो तन भी बिगड्यो, लाभ हाथ नहीं आवे रे।
थोड़ा ही दिनां में बन गयो डोकरो ।।८।।
"रंगमुनि" तो गावे थाने, सांची ही सुणावे रे।
तपस्या सूं सुधरेगी थांरी आतमा ।।९।।

***

卐 दीक्षार्थिनी 卐

(तर्ज—सरवर पाणीडे ने जाऊँ................)

गुरुवर गुण रा सागर, म्हारो ज्ञान घड़ल्यो भर दीज्यो ।
घड़ल्यो भर दीज्यो रे, म्हारे शिर पर धर दीज्यो ।। टेर ।।

करु साधना शक्ति भर मैं, ऐसो वर दीज्यो ।
अज्ञान भर्यो मन म्हारो गुरुवर, खाली कर दीज्यो ।। गु० ।।

पंच प्रमाद हटा दूं ऐसो, आतम बल दीज्यो ।
संचित कर्मा रो दल भेदन, संयम शर दीज्यो ।। गु० ।।

सफल साधना कर संयम की, शिवपुर सुख वर ल्यूं ।
आशीर्वाद "अर्चना" चाऊँ, गुरुवर दे दीज्यो ।। गु० ।।

卐 स्वागत-गीत 卐

(तर्ज—म्हाने जयपुरियो................)

आया आया महाराज, तिरण तारण री जहाज ।
म्हाने सोना रो सूरज भलो, उग्यो म्हारा गुरुवर सा ।
थांणी वलिहारी है................ ।।टेर।।

लागी घणा दिना सूं आस, म्हानें पूरो थो विश्वास ।
ओतो आज मनोरथ इनी घडी, फल ग्यो म्हारा गुरुवर सा ।।१।।

थाँ तो गांव-गांव ने तार्‍या, भवि जीवां ने उबार्‍या ।
अब तो मोपर मेर करीने, आप पधार्‍या म्हारा गुरुवर सा ।।२।।

थांरी वाणी प्यारी लागे, सुणतां सुणतां हियो जागे ।
एडी अमृतधार अठे भी, वहाइज्यो म्हारा गुरुवर सा···· ।।३।।

अब तो मेघ झड़ी लग जावे, सारो पाप मेल धुल जावे ।
जिनसूं आतमा रो तालो भी, खुल जावे म्हारा गुरुवर सा।।४।।

सुत्तर चौपाई सुणावो, म्हाने ज्ञान भी दिरावो ।
वातां माननें बखाण देवो, पडसी म्हारा गुरुवर सा···· ।।५।।

एतो 'सुमन विनय' रो धारो, अरजी बायां री स्वीकारो ।
बाजे "विजय" नगाड़ा जीतरा, जग मांही म्हारा···· ।।६।।

***

#卐 स्वागत-गान 卐

(तर्जः—चिरमी रा ....)

गुरुसा पधार्‌या शहर में,
वांरो स्वागत करैं नर नार।
वांरी जाऊँ दर्शन की ॥ टेर ॥

पलक बिछावां पंथ में,
मैं बाट निहार-निहार ॥ वारी.... ॥ १ ॥

आज भलो दिन ऊगियो,
कर दर्श सफल हुई देह ॥ वारी.... ॥ २ ॥

नव गज धरती दल चढ्‌यो,
म्हारे अमृत वरस्या मेह ॥ वारी.... ॥ ३ ॥

भाग्य भला गुरु भेटिया,
म्हारो चरण-कमल सूं नेह ॥ वारी.... ॥ ४ ॥

संयम की करे साधना,
वांरो जीवन ज्योतिर्मान ॥ वारी.... ॥ ५ ॥

दुर्लभ दर्शन गुरुदेव रो,
नित धरे "अर्चना" ध्यान ॥ वारी.... ॥ ६ ॥

*
***

卐 म्हारा सत्गुरु दयाल 卐

(तर्ज—कठासूं आई सूंठ कठासूं ....)

कठासूं आयो मोतीड़ो, कठासूं आई लाल ।
कठासूं आया ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल ? ....॥

समदर से आयो मोतीड़ो, खाना सूं आई लाल ।
मरुधर से आया ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल........॥

कठे उतरे मोतीड़ो ने कठे उतरे लाल ।
कठे उतरे ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल ? ....॥

बाजारां उतरे मोतीड़ो, हाठा में उतरे लाल ।
स्थानक में उतरे ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल.. .....॥

कठे सौवे मोतीड़ो, ने कठे कठे सौवे लाल ।
कठे सौवे ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल ? ....॥

नथड़ी में सौवे मोतीड़ो, हाराँ में सौवे लाल ।
पाटा पर सौवे ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल.......॥

कितरा मोला मोतीड़ो, ने कितरा मोला लाल ।
कितरा मोला ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल ? ....॥

लाखां मोला मोतीड़ो, हजारां मोला लाल ।
अनमोला ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल........॥

टूट गयो मोतीड़ो, ने बिखर गई लाल ।
रूठ गया ए म्हारे सत्गुरुसा दयाल ?.......॥

पोय लेस्यां मोतीड़ो, ने बुवार लेस्यां लाल ।
मनाय लेस्यां ए म्हारे सत्गुरुसा दयाल........॥

कैसो चमके मोतीड़ो, ने कैसो चमके लाल ।
कैसा चमके ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल ?........॥

तारा ज्यूं चमके मोतीड़ो, ने किरणा ज्यूं चमके लाल ।
सूरज ज्यूं चमके ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल.......॥

किरणे प्यारो मोतीड़ो, ने किरणे प्यारी लाल ।
किरणे प्यारा ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल ?........॥

भायां ने प्यारो मोतीडो, बायां ने प्यारी लाल ।
भक्तां ने प्यारा ए म्हारा सत्गुरुसा दयाल........॥

卐 विदाई-गीत 卐

(तर्ज—लाग्यो लाग्यो..................)

विदाई री विकट वेला, याद घणी आसी हो,
भूलालां नहीं हो गुरुवर आपने ।। टेर ।।

अमावस ने पूनम, बिताई गुरु सागे हो ।
भूला ने वताया मार्ग ज्ञान रो ।।........।।१।।

पूरो प्रेम लगा गुरु, आज छिटकायो हो ।
आँसूडा आवे हैं थांरी याद में ।।........।।२।।

अविनय हुयो जो गुरुवर, माफ सगलो कीजो हो ।
दर्शन दिराइजो पाछा वेग सूं ।।........।।३।।

दिल दुःख पावे गुरु, बोलियो न जावे हो ।
थोडा में ही गुरुवर, विनति मानजो ।।........।।४।।

प्यास वुझी नहीं पूरी, केवल ठंडी हवा पाई हो ।
वगीचो गुरुवर पाछो सींचजो ।।........।।५।।

✤ विदाई गीतिका ✤

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल……………)

वेगा आइजो हो, २ गुरुदेव आप म्हाने भूल न जाइजो हो ।
वेगा आइजो हो ।।टेर।।

जैनधर्म को प्रेम लगा, मत अधबीच में छिटकाइजो हो ।
विचरत-विचरत वेगा म्हाने दरस दिराइजो हो………।।१।।

चार संघ री आ फुलवारी, सतगुरु मत कुमलाइजो हो ।
जिनवाणी की झड़ी लगाकर, सरस बनाइजो हो ……।।२।।

ज्ञान ध्यान में मस्त होय मुनि, गुरु को पाट दिपाइजो हो ।
पाखंडी मद गाल गुरुजी, वाने जैनी बनाइजो हो………।।३।।

गाँव गाँव और नगर नगर में, तप री धूम लगाइजो हो ।
जैनधर्म रो झंडो जग में, जबर जमाइजो हो ……।।४।।

हाथ जोड़ कर आही विनती, ध्यान में लेता जाइजो हो ।
बारह मास में एक बार तो, आयां रहिजो हो………।।५।।

卐 कमर्‌यां कस गई है 卐

(तर्ज—नखरालो देवरियो..............)

वेला आज विदाई री, सुहानी आ गई है।
म्हाने करणो अठासु विहार, कमर्‌यां कस गई है ।।टेर।।

आनन्द सू चौमासो वीत्यो, त्याग तपस्या खूब हुई।
गुरु ज्ञानी से जो भी सीख्यो, वाणी वा बरसाई ।।
मत वाणी ने विसरजो क कमर्‌यां.......... ।।१।।

चार संघ री आ फुलवारी, रोज रहे हरियाली।
दिन दूनी और रात चौगुनी, वनी रहे खुशियाली ।।
म्हारो आशीर्वाद है ओ क कमर्‌यां.......... ।।२।।

मिलना और बिछुड़ना बन्धु, यह तो जग की रीत।
वीतराग रे पथ पर चाले, वांस्यु रखजो प्रीत ।।
म्हारो ओइज केणो है क कमर्‌यां.......... ।।३।।

भूल चूक कोई हो गई हो, तो कर दीजो सब माफ।
मैं तो उड़ता पंछी गगन का, म्हाको रस्तो साफ ।।
पथ ओइज लेणो है क कमर्‌यां.......... ।।४।।

आता जाता रे बोला तो याद बनी रह जासी।
कहे "अर्चना" चार संघ री सेवा भूली न जासी ।।
सबने प्रेम सु रेणो है, ओ ध्यान में राखीजो ।।५।:

***

卐 चाय रो चटको 卐

(तर्ज—पल्लो लटके ··· ··········)

लाग्यो चटको रे भाया लाग्यो चटको ।
'क' ऊनी ऊनी चाय पीवरण रो लाग्यो चटको ।।टेर।।

छोड्या दूध मलाई मसका, छोड़ी रे बासुन्दी ।
ऊनी ऊनी चाय पीवरण री लागी थांने धुन्धी·······।।१।।

धरम ध्यान री छूटी बातां बिस्तर मांय चाय ।
आया पावरणा भूल्या जीमरण, पीवो ऊनी चाय·······।।२।।

अफसर नौकर सारा देखो, हुवे चाय सु राजी ।
टाबर छोरा और डोकरा रेवे चाय सु राजी·······।।३।।

घर में आई चाय बापड़ी, होटल मांय चाय ।
आया जंवाई चाय बनाओ, बेटी ने दो चाय ·······।।४।।

दिन भर घर में चाय हुए रे पड़वा लाग्यो घाटो ।
चाय पीवंता देख भाइड़ा हो गया मूंगो आटो·······।।५।।

केवे "ऋषभ" थे ले लो सोगन चाय पीवन री भाई ।
नईं तो ढांचा सूख जावसी, काम न आवे कोई·······।।६।।

卐 श्राविका का गान 卐

(तर्ज—म्हारो जयपुरियो..............)

मैं तो तिक्खुत्तो के पाठ, वन्दन करती हो म्हारा मारासा।
वंदना म्हारी झेलो सा, दया पालो केवो सा, मीठी वाणी
बोलो सा..........।।टेर।।

आई म्हारे घर सु चाल, सुन लीजो थे दीनदयाल।
म्हारी सहेल्यां ने संग मांहे लाई हो म्हारा..........।।१।।

सांची श्राविका कहलाऊँ, धर्मण बाई नाम धराऊँ।
सांचो धरम जिनराज रो म्हूँ पाई हो म्हारा..........।।२।।

करु सामायिक हमेश, म्हारे पूरी धर्म री रेस।
म्हे तो प्रतिक्रमण सुबे शाम करती हो म्हारा..........।।३।।

स्थानक मांही नित जाऊँ, मुँहपत्ती बेठका संग लाऊँ।
म्हे तो अनुपूर्वी नोकरवाली फेरु हो म्हारा..........।।४।।

कीदी लीलोती ने वन्द, नहीं खाऊँ जमीकंद।
सकरकन्द रो आगार म्हारे रखज्यो म्हारा..........।।५।।

नहीं गंदी गाल्यां गाऊँ, नहीं लोगां ने शरमाऊँ।
नहीं ढोला ऊपर रमक झमक नाचूँ हो म्हारा..........।।६।।

म्हारे घणी तरे रा त्याग, सुन लीजो थे महाभाग।
ऐसी श्राविका नजर्यां में थोड़ी आसी हो म्हारा.......।।७।।

ऐसी श्राविका मैं आई घणा दर्शन री उमगाई।
म्हारी विनति "रसिक" वेगी सुनज्यो हो म्हारा.......।।८।।

***

卐 चौरासी रा दुःखडा 卐

(तर्ज—खड़ी नीम के नीचे..............)

भुगत रह्यो जीवड़लो थांरो एकलो ।
चौरासी रा दुःखडा थें तो ज्ञानदृष्टि सु देख लो ।।टेर।।

किसे देश सूं आयो है ओ, किसे देश में जावेला ।
कठै किता दिन ठहरैला, कहो ज्ञान्यां बिन कुण गावेला ।।
ज्ञान्यां रे चरणां में माथो टेक लो.......चौरासी........।।१।।

नरक-स्वर्ग रा दुःखडा सुखडा, कदाच थांने याद नहीं ।
पण तिर्यंच मिनखां रा तो देख रह्या हो थे सदा सही ।।
कर-कर वांने याद, कर्म थे नेकलो.......चौरासी ....।।२।।

बीत गया है जन्म अनन्ता, और बीतता जावेला ।
सम्यग्दर्शन हुआ बिना, जन्मांरो अन्त न आवेला ।।
तात्विक ज्ञान जरूरी, प्रभु वच पेख लो.......चौरासी....।।३।।

तत्वज्ञान में यद्यपि थांरो, मनड़ो थोड़ो लागे है ।
तो भी करनो ही पड़सी, नहीं नानी रो घर आगे है ।।
तवो चढ़ रह्यो है, "धन" रोटी सेक लो.......चौरासी........।।४।।

卐 महापर्व सम्वत्सरी 卐

(तर्ज—नीला घोड़ा रा असवार...............)

महापर्व सम्वत्सरी, लाया नयी बहार ।
मिटे कलुषता चित्त की, हो समता का संचार ।।टेर।।

जैन जगत का त्यौहार, सम्वत्सरी नामे सुखकार ।
लाया अद्भुत धर्म बहार, त्याग तपोवन है गुलजार ।।
मैत्री धार बहायें हम, प्रेम उपहार लुटाएँ हम............ ।।१।।

करें आज अपने ही द्वारा, अपनी पहचान ।
क्यों होता चंचल अशांत मन इसका करें निदान ।।
जग जाए ऐसा संकल्प, हो जाएगा कायाकल्प ।
सोई शक्ति जगाएँ हम............ ।।२।।

हर जैनी श्रावक चाहे रहता हो देश विदेश ।
यह दिन निश्चित लाता है, आध्यात्मिक नव उन्मेष ।।
करता संयम का अभ्यास, सामायिक पौषध उपवास ।
शासन महिमा बढ़ाएँ हम.......... ।।३।।

अथ से इति तक सुनें वीर प्रभु का प्रेरक इतिहास ।
कैसे हुआ जैन शासन में कब कब ह्रास-विकास ।।
शासनसेवी जैनाचार्य, उनका स्मरण आज अनिवार्य ।
उनकी स्तवनाएँ गाएँ हम .... ।।४।।

ईर्ष्या - मत्सर और क्रोध का कचरा झाड़ बुहार।
उपशम जल से धो निज घर में, लाएँ नया निखार॥
औरों की भूलों को भूल खुद व्यवहार किये प्रतिकूल।
क्षमा भावना लायें हम..........॥५॥

खमत - खामरणा कर लाएँ अपने जीवन में मोड़।
वैर विरोध मिटाने का यह, आया क्षरण बेजोड़॥
आत्मालोचन का यह पर्व, त्यागें आग्रह गुस्सा गर्व।
ऋजुता मृदुता बढ़ाएँ हम..........॥६॥

卐 विनती 卐

(तर्ज—नखरालो देवरियो..............)

म्हे तो थाँरा टाबरिया, थे म्हांरी विनती सुण ल्यो ।
म्हारे मन रा साँवरिया, थे म्हांरी विनती सुण ल्यो ।।टेर।।

सुन वामा रा लाल लाडला, थाँरी शरण म्हे आया ।
तन मन सगला अर्पण थांने, थांसू आस लगाया ।।
म्हारो वेड़ो पार लगा, थे म्हांरी.......... ।।१।।

प्रभुजी थे हो महाज्ञानी, भक्तां का रखवाला ।
भक्ति थांरी म्हानें दीजो, गांवां गुण म्हे थांरा ।।
म्हारे मन री प्यास बुझा, थे म्हांरी.......... ।।२।।

हिवड़े में हो मूरत थांरी, निशदिन दर्शन पावां ।
थांरी ही पूजा में रत मैं, थांने शीष नमावां ।।
म्हांरी रंग दो चादरिया, थे म्हांरी.......... ।।३।।

थांरे रंग में रंगी चदरिया, दूजो रंग नहीं लागे ।
काम क्रोध मद लोभ मोह, सव दूर २ ही भागे ।।
गावे "मण्डल आदेश्वर", थे म्हांरी.......... ।।४।।

卐 धन की माया 卐

(तर्ज—बटाऊड़ो आयो...............)

दुनिया धन में मुरझाई दिन रात,
धंधा में भोली दौड़ रही ।।टेर।।

भूख प्यास भी सहन करे रे, ठण्ड सु भय नहीं खाय।
थर-थर धूजे कोमल काया, धन कमावाने जाय ... धंधा ... ।।१।।

कौड़ी-कौड़ी भेली करी ने, जोड़े लाख दो लाख ।
करोड़पति री इच्छा राखे, लेख लेख्या ही फल चाख ... धंधा ... ।।२।।

पैसा ने परमेश्वर माने, भूल जाये भगवान।
दीन हीन कोई आवे द्वार पै, देय सके नहीं दान ... धंधा ... ।।३।।

धर्मकर्म करबा री बेल्या, घर मांही छिप जाय।
सतगुरु देवे सीख ज्ञान री, लागे न हिरदे रे मांय ... धंधा ... ।।४।।

चेतन जासी एकलो रे, धन नहीं आवे लार।
क्यूं अनर्थ कर धन कमावे, डूब मरेला मझदार ... धंधा ... ।।५।।

वाह ! वाह ! रे धन थांरी माया, सबने नाच नचाय।
"रसिक" प्रभु रा भजन बिना रे, परभव में दुःख पाय ... धंधा ... ।।६।।

卐 आतम-पृच्छा 卐

(तर्ज—पड़ियो पाणी में पापाण...............)

सोयोड़ो संसार इनमें, जागे जको कुण है ?
जागे जको कुण है, त्यागे जको कुण है ? ।।टेर।।

नींद में तो मीठा मीठा सपना ही आवे।
अंखियाँ ने खोल रस्ते लागे जको कुण है ?......।।१।।

तृष्णा री वेड़ी उणस्यूं जकड्या संसारी।
वेड़ी ने तोड़ दूरो भागे जको कुण है ?......।।२।।

क्रोध है खूंखार डाकू सगला ने लूटे।
क्षमा री वन्दूक उण पर दागे जको कुण है ?......।।३।।

काम - वासना रे आगे वड़ा वड़ा हार्‌या।
काम ने पछाड़ आवे आगे जको कुण है ?......।।४।।

वडवीर "चन्दन" वो ही सत्य जो पिछाने।
अनादि अनन्त म्हारे सागे जको कुण है ?......।।५।।

***

卐 अन्न-देव 卐

(तर्ज—नागर नन्दजी का लालो..............)

म्हारा अन्नदेवताजी, थे बेगा पधारो,
राजयां बिन नहीं सरेला जी ।।टेर।।

अनियो नाचे अनियो कूदे, अनियो ताल बजावे ।
एक दिना अनियो नहीं मिले तो लंबा होय सुजावे ।।१।।

अनियो राजा अनियो प्रजा, अनियो रे उमराव ।
एक दिना अनियो नहीं मिले तो पड़े नीच के जाय ।।२।।

सब जग में है अन्न की माया, पल दो की ही माया ।
एक दिना अन्न नहीं मिले तो मुख दियो कुम्हलाय ।।३।।

वासज कीधा, बेला कीधा, कीधा तीन ने चोला ।
आयो पाँच को पारणो जब, पाडण लाग्यो हेला ।।४।।

अन्न खाया हुशियार हुवे तू दिन २ वधे सवायो ।
धर्म ज्ञान तू कुछ नहीं सीखे, सारो जन्म गमायो ।।५।।

卐 आंसू ढलके 卐

(तर्ज—पल्लो लटके..................)

आंसू ढलके नैनां से आंसू ढलके
जरा सा, जरा सा पीछे मुड़ के देखो।
म्हारा आंसू ढलके........ ।।टेर।।

कर्मराज की लीला देखो बिकी चोवटे आय।
हाथ पांव बेड़ी से जड़ग्या पड़ी भोंयरा माय...... ।।१।।

तीन दिनाँ की भूखी प्यासी रही भावना भाय।
प्रभु पधारे आंगणिये मन खुशियाँ नहीं समाय........ ।।२।।

रोम रोम हुलसायो, पायो नर जीवन को सार।
उड़द बाकुला वहराई ने करसूं भवजल पार...... ।।३।।

अन्तराय क्यों आडे आई करणी जन्म रा पाप।
नैनां बरसे सावन भादव प्रभू पधारो आप........ ।।४।।

जोग मिल्यो सम्पूर्ण प्रभुजी पाछा फिर कर आया।
चन्दनबाला कियो पारणो धन्य कर्म की माया ।।५।।

सज्जन जन सब करे प्रशंसा देव-दुंदुभि बाजे।
"ललित" प्रभु की महिमा देखो, जय जय ध्वनियाँ गाजे ।।६।।

卐 बेनां सुणो तो सही 卐

(तर्ज—नागर नन्दजी का लाला ....)

बायां सुणो तो सही रे, बेनां सुणो तो सही ।
रामजी दयाल जाने भूल क्यों गई ।।टेर।।

घर में बातां, आंगण बातां, बातां पानी जातां ।
ए बातां थांरी जदी मिटेला जम मारेगो लातां ।।१।।

पाँच भाई घर में हो तो लागे घणा पियारा ।
जो बायां तो दाव लगे तो, कर दे न्यारा न्यारा ।।२।।

अकेली जो बाई हो तो, खादोड़ो नहीं खूटे ।
पाँच बायां भेली हो तो, घर भांगी ने ऊठे ।।३।।

लड़वाने तो सूरी पूरी, राम भजन में माठी ।
जवायां की गाला गावां, जावे शहर में न्हाठी ।।४।।

एरण की तो चोरी कर ने करे सूइ को दान ।
ऊँची चढ २ देखे बायां कद आसी विमान ।।५।।

एड्यां निरखे, चाल निरखे, ये बायां का चाला ।
कहे "कबीर" सुणो ए बेनां जम करसी मुँह काला ।।६।।

*
***

卐 गुरु का महत्त्व 卐

(तर्ज—कदे आवोला सांवरिया............)

गुरु बिना घोर अंधार, चांद भावे रोज चढे ।।टेर।।

गुरु बिना ज्ञान ध्यान नहीं आवे, वेद पुकारे चार ।
गुरु बिना कथनी करनी थोथी, वस्तु न पावे सार ।।
चांद भावे.........।।१।।

गुरु कृपालु परम दयालु, शिव सुख के दातार ।
भक्ति मुक्ति नाम पदारथ, पावे गुरु के द्वार ।।
चांद भावे.........।।२।।

निश दिन म्हारे मन बसो जी, ज्यूं फूलों में वास ।
शशि चकोरा रवि कमल ज्यूं, चातक घन की आस ।।
चांद भावे.........।।३।।

संसार समुन्दर खारा जल सूं, भर्‌यो हिलोला खाय ।
आप सरीखा गुरु मिले तो, बतला दे तरण उपाय ।।
चांद भावे.........।।४।।

सती "अर्चना" अरज करें यूं सादर शीष नमाय ।
चरण शरण में राखज्यो जी, मत दीजो विसराय ।।
चांद भावे.........।।५।।

***

卐 पैसो प्यारो 卐

(तर्ज—पनजी मूंडे बोल ... .)

पैसो प्यारो रे दुनियाँ में लागे मोहनगारो रे ।।टेर।।

पैसां थी नर प्यारो लागे जेम काजल ने कारो रे ।
अजब चीज दुनियाँ में पैसो कहे जग सारो रे ।।१।।

पैसां खातर परमेश्वर की सौ-सौ सोगन खावे रे ।
प्राणप्यारी ने छोड पुरुष, परदेशां जावे रे ।।२।।

पैसां से दुनियाँ दे आदर आगे आप पधारो रे ।
निरधन ऊभो टुगमग जोवे लागे खारो रे ।।३।।

पैसा आगल पत्तो न लागे जो परमेश्वर आवे रे ।
महादेव ने पारवती आ बाहर कढावे रे ।।४।।

काणा खोड़ा लूला भोला ने ओ पैसो परणावे रे ।
बिन पैसा से छैल छबीला नार न पावे रे ।।५।।

पैसा खातिर देश परदेशां धूप गिणे नहीं छाया रे ।
करे नौकरी बहु नर नारी जोडे माया रे ।।६।।

आछो कपड़ो कदी न पैरे दिन काढे कुकश खाई रे ।
नहीं खावे नहीं पैरेण देवे, घर की माई रे ।।७।।

नहीं खावे नहीं खरचे मूरख दान देता हाथ धूजे रे।
छाछ तणो पाणी नहीं घाले, घर गायां धूजे रे ॥८॥

तूं जाणे धन लारे आसी, बांधी गठरी गाड़ी रे।
अन्त समय हाथां की बींटी लेसी काढी रे ॥६॥

ऐसा सोच मनुष्यजन्म का अब तो लाबो लीजो रे।
कुटुम्ब कबीलो धन दौलत में चित्त नहीं दीजो रे ॥१०॥

अणचित्यारी सुनले मूंनी काल नगारी देसी रे।
कंठ पकड़ कर जब ले जासी, तूं कांई करसी रे ॥११॥

पैसा ने जो धूल बराबर समझे वो नर ज्ञानी रे।
जोधमुनि शिष्य चौथमल कहे भवी हित जानी रे ॥१२॥

卐 नखरालो मनडो 卐

(तर्ज—नखरालो देवरियो..............)

नखरालो ओ मनडो, मुश्किल स्युं वश में आवे ।
मतवालो ओ मनडो, निरंकुश रहणो चावे ॥टेर॥

है स्वभाव रो टेढ़ो पक्को, रोक्यो रुक नहीं पावे ।
सीधे मारग ने ठुकरा कर, टेढ़े रस्ते जावे.......... ॥१॥

कह्यो न माने औरां रो, ओ आपणी सदा चलावे ।
बड़ा बड़ा मिनखा ने ज्यूं चावे ओ नाच नचावे....... ॥२॥

पल में त्यागी पल में योगी रो ओ रूप बनावे ।
इण रा अभिनय देख देखकर, योगी भी चकरावे...... ॥३॥

मर्यादा री लक्ष्मण-रेखा, झट सूं तार गिरावे ।
जो भी भाव उठे भीतर में, करतो नहीं सकुचावे....... ॥४॥

विजय शुद्ध आलम्बन पर, जो साधक इने टिकावे ।
सत्यं शिवं सुन्दरं ही वो अक्षय ज्योति जगावे....... ॥५॥

卐 दुनिया में केने आया 卐

(तर्ज—सायबजी जयपुर सु आया ....)

दुनिया में केने आया, मिनख जमारो पाया ।
कांई थे साथे लाया, कांई ले जावोला ।।
दुनिया में केने आया ....

इण दुनिया में जो कोई आवे, चार दिनां रे वास्ते ।
पूरी टेम हुयां सब जावे, अपने अपने रास्ते ।।
जेड़ा करम करोला भायां, बेड़ा ही फल पावोला ।
अंत भला रो भलो हुवेला, बुरो बुरो फल पावोला ।।
चोखा ने चोखी माया, खोटा ने खोटी काया ।
कांई थे साथे........ ।।

शाह सिकन्दर पंचम जार्ज, जाती बेल्यां केय गया ।
केई बातां का मनसोबा, मन का मन में रेय गया ।।
तीर्थंकर अवतारी शिक्षा, सांची सांची देय गया ।
धर्मी धर्मी पार उतर ग्या, पापी अधबिच रेय गया ।।
आगे सु आगे आया, चेला ने गुरु बताया ।
कांई थे साथे.......... ।।

चार दिनां री चांदनी रे, फेर अन्धेरी रात रे ।
मतलब के सब संगी साथी, बेमतलब नहीं बात रे ।।
अनहोनी होने की नाहीं, होनी है सो होय रे ।
"अनुप" अवसर पाय के भाया विरथां काहे खोय रे ।।
वेलयां परवाणे वांया, मोती निपजेलां भायां ।
कांई थे साथे.......... ।।

दुनियां में केने आया ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ....

卐 सुखी न मिलिया एक भी 卐

(तर्ज—म्हाने अबके बचाले मोरी माय ....)

मैं तो ढूंड्यो रे सहु जग मांय, सुखी न मिलिया एक भी ।।टेर।।
हाट हवेली भरया खजाना, भोगण वालो नांय ।
भाटो भाटो देव मनावें, बिना पुत्र के झूरे माय ।।सुखी....।।१।।
पईस्यो पायो नाम कमायो, करे सवाई बात ।
कंवर साब कपूता जलमयां, बापूजी रोवे दिन रात ।।सुखी....।।२।।
पदमण मिली दयालू कहीं पर, सेठ न लावो लेय ।
मिली कर्कशा नार कर्म सूं खावे न खावण देय ।।सुखी...।।३।।
छप्पर पलंग है महल महलिया, जाली झरोखादार ।
विना कंत के झूरे कामनी, खारा लागे रे घरबार ।।सुखी।।४।।
करी कमाई लक्ष्मी पाई, बंगला मोटर कार ।
बिना नार के लगे अलूणा, छोड़ गई रे मझदार ।।सुखी...।।५।।
देह मिली देवा सी सुन्दर, रोग न छोड़े लार ।
क्रोडपत्यांनें खाता देख्या, पालक की सब्जी लूखो अहार ।सुखी।।६।।
पलटन सी वढ रही घर में, पर आमदनी नाय ।
कोई के कन्या चार कंवारी, कोई कमावा न जाय ।।सुखी।।७।।
एक उदर का जाया लड़ नित, कोई के बहु परिवार ।
कोई कंवारा कोई दुःखिया, कोई दिवाल्या कर्जादार ।।सुखी।।८।।
धन वैभव पद पायो ऊंचो, नहीं बोलण का ढंग ।
कवि पण्डित लेखक ज्ञानी ने, पइस्यां सूं देख्या तंग ।।सुखी... ।।९।।
कोई के कांई कमी है घर में, कोई के कांई दुःख ।
इण संसार समुद्र मांही, दुख तो घणा ने थोड़ा सुख ।।सुखी।।१०।।
इण जगती सूं जो मुख मोड़या, लाग्या धर्म के पंथ ।
मन ने जीत्या जीत जगत में, सांचा सुखी है निग्रन्थ ।सुखी।।११।।

卐 मन भटके 卐

(तर्ज—पल्लो लटके..............)

मन भटके म्हारो, यो मन भटके ।
पराया पराया पुद्‌गल पर यो सदा अटके........ ।।टेर।।

पल भर में यो बम्बई जावे, पल भर में यो मद्रास ।
दिल्ली कलकत्ता में घूमे, होवे नहीं निराश....... ।।१।।

कभी कहे मैं मेवा खावुं, कभी कहे मैं माल ।
कर्म कहे नहीं पुण्य कमाये, खाओ रोटी दाल....... ।।२।।

बंध मोक्ष के कारण जबरो खूब लगावे जोर ।
चंचल मन को नहीं भरोसो, करे बहुत ही शोर ।।३।।

घणो मनाऊं पण नहीं माने, अन्तर में नहीं जाने ।
स्वर्ग नरक का जाल बुने, हित बाहर बाहर माने.... ।।४।।

पापों में मन खूब रमे, यो करे न सज्जन संग ।
कैसे हो उद्धार प्रभु, अब मच्यो कर्म को जंग .... ।।५।।

'ललित' धर्म के सम्यक, पथ पर मन मारो लग जावे ।
कर्म रोग को नाश करे, आतमज्योत जलावे....... ।।६।।

फ खावा में कसर नहीं फ

(तर्ज—वटाउडो आयो लेवाने..................)

तूं तो झपट लगावे दिन रात, खावा में थारे कसर नहीं ।। टेर ।।

दिन उगा तूं खावरा बैठे, पिवे दूध और चाय ।
मीठा को तूं करे कलेवो, पूरण प्यालो भराय ।।१।।

रोटी वेला रोटी जीमे, करे दफेरी और ।
खरबूजा, तरबूजा खावे, ऊपर सूं खावे मीठा बोर ।।२।।

रात पड्यां तू खावरा बैठे, जमींकन्द को साग ।
अब तो पूरो पेट भर गयो, दूध लेवे फेरु मांग ।।३।।

धर्म कर्म ने खूंटी मेली, दीनी सामायिक छोड़ ।
संतों का दर्शन करवाने, कदीके आवे मूंडो मोड़ ।।४।।

लोलोती की गिनती नहीं रे, जमींकंद नहीं छोड़ा ।
दान पुण्य में समझे नांही, परभव में पडसी भाया फोड़ा ।।५।।

क्रोध मान और माया लोभ कर, भरी पाप की पेटी ।
दान पुण्य को काम पड़े तो, भाग जावे तू छेटी ।।६।।

संत महात्मा कहवे भाया, करो धर्म की बात ।
खेल तमाशा देखन तूं ऊबो रह जावे सारी रात ।।७।।

*

****

卐 म्हाने चरणां में लो रख 卐

(तर्ज—गाडी चाले छक...............)

कालजो धड़के धक धक, म्हाने चरणां में लो रख ।
म्हाने डरपणी लागे सा, भव वन में ।।टेर।।

आ ऽऽऽ भटक भटक मैं हार गई हूं, मिल्यो न मारग सीधो ।
ओखी घाट्यां ऊबड खाबड, उल्टो मारग लीधो ।।
हे लो सुनलो झटपट ... कालजो...... ।।१।।

क्रोध मान मद लोभ लुटेरा, फिरे ताकता वन में ।
संभल-संभल कर चालूं तो भी, भय लागे छे मन में ।।
पग पड़े है डगमग ......कालजो ...... ।।२।।

राह बतादो मुक्ति की तो, भूलूं नहीं उपकार ।
करो कृपा की कोर "अर्चना" गुण गाऊँ हरबार ।।
थांरे चरण शरण में लग ... कालजो ...... ।।३।।

卐 कैसे सुधरे 卐
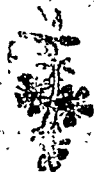
(तर्ज—पड़ियो पाणी ··· ··········)

'भारत बन गया ब्रिटेनिया' कैसे सुधरे ।
कैसे सुधरे हो भैया कैसे सुधरे ।। टेर ।।

घरां घरां में केक चाल ग्या, रोटी डबल रोटी ।
छोरा राखे जेब में कंगा, छोरियाँ दो दो चोटी ।।
चल गया फैशन का चालनियां, कैसे······ ।।१।।

मम्मी डैडी कहे सास से, मात-पिता कुण बोले ।
सट-अप थैंक्यु आइ एम सॉरी, ऐसा शब्द टटोले ।।
चल गया इंग्लिश का चालनियां, कैसे······ ।।२।।

मलमल खादी गयो विलायत, टेरेलीन आ चाली ।
सूट पहनकर साहब बणियो, मेम बणी घरवाली ।।
चल गया पश्चिम का चालनियां, कैसे······ ।।३।।

बीबीजी तो चाल्या क्लब में, आधो अंग उगाडो ।
बाबूजी तो देवे चोपो, राखे छोरी छोरा ।।
चल गया क्लब का चालनीयां, कैसे······ ।।४।।

नवकार मंत्र को नाम न जाणे, देखे पिक्चर सारा ।
प्रार्थना व्याख्यान चोपी, लागे वाने खारा ।।
चल गया टी. वी. का चालनियां, कैसे······ ।।५।।

'चन्द्रकला' को कहनो है भायां, मानो सब ही बहनां ।
जैनधर्म को मर्म भी जानो, समझो उसको गहना ।।
चल गया वीडियो चालनियां, कैसे······ ।।६।।

※※

卐 भक्ति कर ले 卐

(तर्ज—ब्याव बिंदणी ········ ···)

कुटुम्ब कबीलो माल खजानो, नहीं करणी रे काम रो।
भक्ति में आवो तो प्यालो, पियो प्रभु रे नाम रो ।।टेर।।

मालिक रे घर मोटी बहियां, यमराज पोथी खोले।
झूठ कपट और सांच ने, भाया कांटा रे माही तोले ।।
जावे जवानी आवे बुढापो २, अंत समय नहीं काम रो।
भक्ति में आवो ··········।।१।।

धनवाला यूं मन में जाणे, मा दुनियां में हां राजा।
चार दिना री जोर जवानी, बाजे रे सारा बाजा ।।
पापी जावे धर्मी जावे २, सच्चो सुख प्रभु नाम रो।
भक्ति में आवो ····· ····।।२।।

"महिला मंडल" कहे सुनि लो, बातों में उमर जावे रे।
राजेन्द्र कहे ये मनख जमारो, बार बार नहीं आवे रे ।।
सीख मान ले भक्ति कर ले २, खरचो नहीं छदाम रो।
भक्ति में आवो··········।।३।।

हेम की हसित लहरें

卐 प्रार्थना 卐

(तर्ज—भाव भीनी वन्दना..................)

साधना के शुद्ध पथ पर चरण ये गतिमान हों अब ।
बंधनों की तोड़ कारा, मुक्ति का संगान हो अब ।।टेर।।

हम सभी विज्ञानमय हैं, हम सभी आनन्दमय हैं ।
हो प्रकट निजरूप ऐसा, सत्य का संधान हो अब ।।१।।

चीज जो बाहर निहारी, मांगते बन कर भिखारी ।
है भरा भण्डार अपना, क्यों रहें अनजान हो अब ।।२।।

ज्ञान की आराधना की, धर्म की समुपासना की ।
वासना के चक्र में क्यों, भटकते बेभान हो अब ।।३।।

क्रोध की सत्ता मिटायें, कुटिलता भी क्यों सताये ।
लोभ पर अंकुश लगे, निर्बल स्वयं अभिमान हो अब ।।४।।

ध्यान प्राणायाम आसन, वृत्तिरोधन के हैं साधन ।
कर सतत अभ्यास इनका, हम स्वयं भगवान् हों अब ।।५।।

⁜ महावीर जयंती ⁜

(तर्ज—बहारो फूल...............)

मनाओ आज सब खुशियाँ, जन्मदिन आज आया है।
लगाओ कह-कहे, नाचो, नया सन्देश लाया है ।।टेर।।

यह दिन था आज, कुण्डलपुर में, भगवान् वीर आये थे।
पिता माता सिद्धारथ औ, त्रिशला सुत कहाये थे ।।
इसी दिन के लिये हमने बरस पूरा बिताया है.........।।१।।

धर्म के नाम पर यज्ञों में, पशु बलिदान होते थे।
बचाया प्रेम से भाइयों को, जो हैरान होते थे ।।
उसी महावीर के चरणों में, सर अपना झुकाया है.........।।२।।

तेरे आने से भारत का, सितारा जगमगाया था।
'जीओ खुद और जीने दो' का, नारा लब पै आया था ।।
इन्हीं कामिल उसूलों ने नया रंग आज लाया है.........।।३।।

तमन्ना दास की दिल में सुखी संसार हो सारा।
बढ़ेगा हर कदम उसका, जो हिम्मत को नहीं हारा ।।
इसी महापर्व ने हमको सबक ऐसा पढ़ाया है.........।।४।।

卐 पारस प्रभु 卐

(तर्ज—एक दो तीन चार..................)

पारस प्रभु प्राणों से प्यारे,
हो स्वामी, मैं सेवक तेरा।
तेरा करूँ २ हरदम मैं ध्यान,
जिनवर, नैया मेरी भव से तिरा ।।टेर।।

अन्तर्यामी हो अविनाशी २,
ज्ञानवंत शिवपुर के वासी।
जग के हो तारणहारा प्रभु,
मोक्षलक्ष्मी है तेरी दासी ।।
विनती है ये २ बारम्बार ।।१।। जिनवर

सूरत जो देखी है ये प्यारी २,
अंगिया सुहानी है ये न्यारी।
प्यारा है जिनवर सहारा मेरा,
तिरने की आई है ये बारी ।।
चरणों में २ मुक्ति-बहार ।।२।। जिनवर

प्राणों से प्यारे ओ जिनवर मेरे,
पाऊँगा हरदम मैं दर्शन तेरे।
मुक्ति की किरणों की ज्योति प्रभु,
राहों में अब जा रहे अंधेरे ।।
"गौतम मण्डल" की २ पुकार ।।३।। जिनवर

आनन पर आभा चमक रही,
दर्शन से मन को मोह रही।
जन्म - जन्मान्तर दुःख भाँज रही,
मिले आत्म-शान्ति सुखकारी है ।। श्री युवा····।।५।।

आप नाम मिश्री मधुकर प्यारा,
आचार्य संघ के मन भाया।
तुम्हें चुन के जन मन हरषाया,
सबके मन आनन्द अनपारी ।। श्री युवा····।।६।।

कागद कर दूं धरती सारी,
अरु नीर करु स्याही सारी।
तो भी म्हारा युवाचार्य श्री रा,
गुण वर्णन में अनजारी ।। श्री युवा····।।७।।

जब तक दिनकर शशि रहे,
तुम नाम की सौरभ अखण्ड रहे।
साध्वी 'उम्मेद' कर जोड़ कहे,
गुरु कर दो नैया भवपारी ।। श्री युवा····।।८।।

卐 चौमासे का दिन 卐

(तर्ज—दिल के अरमां ………)

आत्मा का संदेशा लेकर आ गया।
चौमासे का दिन ये प्यारा आ गया ॥टेर॥

पापों का कलिमल सभी को धोना है।
आज अवसर ये सुनहरा आ गया ॥१॥

फंस के मोह की नींद जीवन खो रहे।
सुप्त आतम को जगाने आ गया ॥२॥

शील समता और दया दिल में बसे।
मन को पावन ये बनाने आ गया ॥३॥

भव-भव में भटके, नहीं सुख चैन मिला।
अमरता का पाठ पढ़ाने आ गया ॥४॥

आत्मदर्शन पा के शुद्ध हो जायें हम।
कर्म-मल को साफ़ करने आ गया ॥५॥

अनंत ऋद्धि आत्मा में है छिपी।
जागृति कर लो, याद दिलाने आ गया ॥६॥

तप संयम की ज्योति जगाने के लिए।
"भारती" कहती यह शुभ दिन आ गया ॥७॥

*

*****

卐 भाव-पुष्प 卐

(तर्ज—होठों से छू लो..............)

चरणों में श्रद्धा से, हम शीष झुकाते हैं।
पूज्य जयमल गणिवर को, भाव-पुष्प चढ़ाते हैं ।।टेर।।

लाम्बिया में जन्म लिया, माँ महिमा के प्यारे।
कुलदीपक मोहन के, मेहता-कुल उजियारे ।।
जन-मन सब हर्षित हो, शुभ गीत सुनाते हैं.......।।१।।

भूधरजी गुरुवर से, संयम ले सुखकारी।
शासन की ज्योति जगा, निज आतम को तारी ।।
पूज्य नाम के सुमिरण से, सुख-शांति पाते हैं.......।।२।।

नहीं सोये वर्ष बावन, त्यागी तपस्वी भारी।
शुभ ज्ञान दिया जग को, रच कविता हितकारी ।।
हर पल चरणों में हम, बलिहारी जाते हैं.......।।३।।

कर जोड़ कहे 'हेमा' पुण्यतिथि मनाते हम।
महिमा का पार नहीं, इसे रटते रहो हरदम ।।
कष्टों को दूर करें, जो निशदिन ध्याते हैं.......।।४।।

॥ श्री युवाचार्य शत शत वन्दन ॥

(तर्ज—दिल लूटने वाले जादूगर..............)

श्री युवाचार्य शत शत वन्दन,
अभिवादन है तुम्हें हरबारी।
तुम चरण कमल की बलिहारी,
प्रतिपल वन्दना है गुरु म्हारी ॥टेर॥

उन्नीसौ सित्तर में जन्म लिया,
तिंवरी के भाग्य को चमकाया।
पिता जमनालाल घर आनन्द छाया,
माता तुलछां खुशियां भारी ॥ श्री युवा.... ॥१॥

बचपन में लीला करते थे,
ऐवन्ता मुनि सम बनते थे।
बच्चों को शिक्षा देते थे,
बनो मात-पिता आज्ञाकारी ॥ श्री युवा.... ॥२॥

उन्नीसौ अस्सी में गृहत्याग किया,
जोरावर गुरुवर भेट लिया।
अरु क्रोध लोभ मोह जीत लिया,
गुरु अनुशासन में श्रेयकारी ॥ श्री युवा.. ॥३॥

आप शान्त दान्त गंभीर गुणाकर,
मधुर सरस सरल स्वभावी हैं।
अरु महान विभूति ज्योतिर्धर,
वाणी में जादू भारी है ॥ श्री युवा.... ॥४॥

आनन पर आभा चमक रही,
दर्शन से मन को मोह रही।
जन्म - जन्मान्तर दुःख भाँज रही,
मिले आत्म-शान्ति सुखकारी है ।। श्री युवा…… ।।५।।

आप नाम मिश्री मधुकर प्यारा,
आचार्य संघ के मन भाया।
तुम्हें चुन के जन मन हरषाया,
सबके मन आनन्द अनपारी ।। श्री युवा…… ।।६।।

कागद कर दूं धरती सारी,
अरु नीर करु स्याही सारी।
तो भी म्हारा युवाचार्य श्री रा,
गुण वर्णन में अनजारी ।। श्री युवा…… ।।७।।

जब तक दिनकर शशि रहे,
तुम नाम की सौरभ अखण्ड रहे।
साध्वी 'उम्मेद' कर जोड़ कहे,
गुरु कर दो नैया भवपारी ।। श्री युवा…… ।।८।।

卐 चौमासे का दिन 卐

(तर्ज—दिल के अरमां ....)

आत्मा का संदेशा लेकर आ गया।
चौमासे का दिन ये प्यारा आ गया ।।टेर।।

पापों का कलिमल सभी को धोना है।
आज अवसर ये सुनहरा आ गया ।।१।।

फंस के मोह की नींद जीवन खो रहे।
सुप्त आतम को जगाने आ गया ।।२।।

शील समता और दया दिल में बसे।
मन को पावन ये बनाने आ गया ।।३।।

भव-भव में भटके, नहीं सुख चैन मिला।
अमरता का पाठ पढ़ाने आ गया ।।४।।

आत्मदर्शन पा के शुद्ध हो जायें हम।
कर्म-मल को साफ करने आ गया ।।५।।

अनंत ऋद्धि आत्मा में है छिपी।
जागृति कर लो, याद दिलाने आ गया ।।६।।

तप संयम की ज्योति जगाने के लिए।
"भारती" कहती यह शुभ दिन आ गया ।।७।।

*

*****

卐 कर्मों ने घेरा 卐

(तर्ज—मैं क्या करूँ राम...............)

मैं क्या करूँ नाथ, मुझे कर्मों ने घेरा,
हो हो, कर्मों ने घेरा ।।टेर।।

ज्ञान पढ़ूँ तो मैं पढ़ नहीं पाऊँ,
सिर को पचाऊँ, पढ़ूँ, फिर भूल जाऊँ।
मिटाओ अज्ञान, मुझे कर्मों ने घेरा....... ।।१।।

सामायिक करूँ तो मोसे बैठ्यो नहीं जावे,
पैर कमर दुखे, औ, जिया घबरावे।
चाहूँ मैं आराम, मुझे कर्मों ने घेरा....... ।।२।।

माला फेरूँ तो मन घूमनें को जावे,
उसे समझाऊँ तो नींद आ जावे।
कैसे जपूँ जाप, मुझे कर्मों ने घेरा....... ।।३।।

उपवास नहीं होय, मासुं आयम्बिल न होवे,
एकासणा करूँ तो शाम भूख लग जावे।
स्वाद नहीं छूटे, मुझे कर्मों ने घेरा....... ।।४।।

पाप नहीं छूटे मासुं धर्म नहीं होवे,
देने के नाम पर जीया मेरा रोवे।
दयाल हो "विशाल", मुझे कर्मों ने घेरा....... ।।५।।

卐 भावना थोड़ी है 卐

(तर्ज—रेशमी सलवार..................)

बने रोटियां जहाँ पर मोड़ी मोड़ी है ।
कैसे आवे संत भावना थोड़ी है ।। टेर ।।

स्थानक में प्रेम बतावे गुरु हम घर क्यों नहीं आये ?
यदि पहुँचे घर पर गुरुवर ! तब कच्ची वक्त बताये ।
वही निगोड़ी है ....।।१।।

पर घर जाकर खाने में, नहीं आप कभी सकुचाये ।
स्वधर्मी स्वघर आये, तब नार बिमार बताये ।।
मुख मचकोड़ी है ....।।२।।

नहीं मिले समय दर्शन का, व्याख्यान में कभी न आये ।
आये तो निद्रा लेवे या टेका ले जम जाये ।।
फोकट जोड़ी है ....।।३।।

मुखपत्ति हो गई मैली, आसन के जम गये जाले ।
चूहों ने पूंजनी कतरी, पुस्तक है दीमक हवाले ।।
माला तोड़ी है..............।।४।।

नहीं समय "मूलमुनि" किसको, मुनिराज करे क्या आके ।
स्थानक की धूल निकालो, रहो बैठे रोटी खाके ।।
लगे न कौड़ी है..............।।५।।

卐 महापर्व संवत्सरी 卐

(तर्ज—ज्योत से ज्योत ....)

पर्व संवत्सरी मनाते चलो,
सबको हृदय से खमाते चलो।
वैर विरोध भुला करके
सबको गले से लगाते चलो ।।टेर।।

जीवन में है द्वेष घृणा का घोर अंधेरा छाया।
मोह - माया की रंग - रलियों में जीवन है भटकाया ।।
दीप क्षमा का जलाते चलो....... ।।१।।

पाप हटाकर इस जीवन में धर्म-कर्म अपनाओ।
'खामेमि सव्वे जीवा' का सब को मंत्र सुनाओ ।।
प्यार के मोती लुटाते चलो....... ।।२।।

वैर से वैर शान्त न होता, उल्टे बढ़ता जाता।
ईंधन से तो बढ़ती अग्नि, किन्तु जल है बुझाता ।।
झरना क्षमा का बहाते चलो....... ।।३।।

तृप्ति हुई नहीं, जिया भरा नहीं खा-खा मेवा मिठाई।
"कीर्तिमुनि" कहे जप तप करके, कर लो नेक कमाई ।।
जीवननैया तिराते चलो....... ।।४।।

卐 पर्व पर्युषण 卐

(तर्ज—नगरी नगरी द्वारे..................)

पर्वराज पर्युषण प्यारे, हमें जगाने आये हैं।
आत्मशांति का मधुर सन्देशा, हमें सुनाने आये हैं ।।टेर।।

अज्ञान ध्वान्त फैला जीवन में, जिससे घोर अन्धेरा है।
क्रोध मान छल राग द्वेष ने यहाँ लगाया डेरा है ।।
कर्मबन्ध की जंजीरों से हमें छुड़ाने आये हैं ।।१।।

मिले कान जिससे दुखियों की, सुन लें करुण पुकारें हम।
मिले नेत्र जिनके पानी से, दिल की लगी बुझा दें हम ।।
परहित अर्पण सर्वस्व करें, यही बताने आये हैं ।।२।।

जीवन का साफल्य यही है, धर्म-ध्यान उपकार करें।
पर्युषण का सार यही है, निज आतम उद्धार करें ।।
यश सौरभ फैले दिशि-दिशि में, यही जताने आये हैं ।।३।।

卐 करना भव से पार 卐

(तर्ज—मैं तेरी दुश्मन ....)

मैं तेरी चेरी आई हूँ द्वारा,
करना तू भव से पारा ऽऽऽ २।
जनम मरण के चक्करों से दूर,
ओ ऽ ऽ प्रभु दूर ...... ।।टेर।।

रात दिवस की मैं हूँ प्यासी,
दर्शन दे दो हे अविनाशी।
तड़फ तड़फ कर मैं तो हारी,
खो दी मैंने उमरिया सारी ।।
तो भी मुझे ना, तूने उबारा ।। करना ...... ।।१।।

लाखों प्राणी तिर गये तुझसे,
क्या नाराजी है जो मुझसे।
बार बार तरसाते हो तुम,
नहीं रहम कुछ लाते हो ।।
मुझे तो बस एक तेरा सहारा ।। करना ...... ।।२।।

"हेमप्रभा" की है इक अरजी,
अरजी पर तू कर दे मरजी।
सच्चे दिल से पुकारूँ तुझे,
दर्शन दे दो प्रभुजी मुझको ।।
महिमा तेरी तो है अनपारा ।। करना .... ।।३।।

***

卐 शरण तेरी आये 卐

(तर्ज—मैली चादर ....)

वीर प्रभुजी दर्शन करने, आज शरण तेरी आये।
भक्तिभाव से करूँ वन्दना, कोटि कोटि गुण गाये।।टेर।।

जबसे प्रभु तुमको भूले हैं, लाखों कष्ट उठाये,
ना जाने इस जीवन भर में, कितने पाप कमाये।
आप हमारे घट-घट वासी, अब क्या हम बतलायें,
वीर प्रभुजी.......।।१।।

राजा हो या कोई भिखारी, द्वार तिहारे आये,
तेरे गुण गाकर के प्रभुजी, मनवांछित फल पाये।
हम भी तेरे द्वार खड़े हैं, अपना शीष झुकाये,
वीर प्रभुजी.......।।२।।

दीनदयाल दया के सागर, राखो लाज हमारी,
नहीं किसी का हमें सहारा, केवल आस तिहारी।
तेरे भरोसे "वीर मण्डल" अब, बैठा आस लगाये,
वीर प्रभुजी.......।।३।।

卐 ले लो सुध मेरी 卐

(तर्ज—आधा है चन्द्रमा...............)

तेरा है आसरा राह तेरी, ले लो सुध आके दीनानाथ मेरी।
दीनानाथ मेरी ।।टेर।।

मुझे अपनी नगरिया दिखा दो, मेरी आशा की खेती पका दो।
तेरे भक्तों में संख्या लिखा दो, तेरे चरणों की सेवा सिखा दो ।।
यहाँ लागे न मन्न, चाहुं प्रभू दरसन।
ले लो शरण में, काहे लगाई देरी ......।।तेरा।।१।।

तेरे चरणों का पाना जरूरी, मत रखो ये इच्छा अधूरी।
सही जांये ना अब तो ये दूरी, नहीं मालुम है राह मजबूरी ।।
तू ही तारणतरण आनन्द मंगल करण।
आत्मा है तुम्हारी चरण चेरी ......।।तेरा।।२।।

मैंने तुमको ही सरवस्व माना, चाहे कहने दो दुनिया दिवाना।
नहीं रहने का यहाँ पै ठिकाना, लक्ष चौरासी गोते लगाना ।।
मैं तो भूला स्वरूप, करके विध-विध के रूप।
चाहुं शिव की अखंड आनन्द लहरी ...।।तेरा।।३।।

卐 संतों के चरण 卐

(तर्ज—ए नील गगन के तले...............)

ए संतों के चरण तले, निधि अमोल मिले,
ज्ञान की करिणयां लब्धी की मरिणयां।
चाहे सो आश फले ।।टेर।।

भक्ति का जादू चलता है हम पर,
भक्ति से मन रंग ले.......... ।।१।।

नम्र विवेकी ये गुण देखी,
घट पट इनके खुले.......... ।।२।।

सेवा का साधन कर ले अराधन,
तो शाश्वत सुख ले.......... ।।३।।

श्रद्धा दृढ़ता राख हृदय में,
कर्म तूफान टले.......... ।।४।।

आगम - रक्षक जिन - पथ - दर्शक,
राग-द्वेष निगले.......... ।।५।।

मीठे "प्यारे" जगत दुलारे,
नित-नित पद-रज ले.......... ।।६।।

*
*****
*

卐 प्रभु दरबार 卐

(तर्ज—साजन मेरा उस...............)

सांचा तेरा दरबार है,
तेरी ही जय जयकार है ।।टेर।।

प्रभु-दर्शन को अखियां तरसी हैं,
मन मन्दिर में मूरत तेरी है ।
जन-जन पर तेरा अधिकार है,
तू ही सबका करतार है ।।१।। सांचा तेरा...

तेरे दर्शन को हम आयेंगे,
सम्यक् ज्योति जलायेंगे ।
कर दिया नाग का हार है,
आया प्रभु जो तेरे द्वार है ।।२।। सांचा तेरा...

जिसने भी तुझको पुकारा है,
जीवन का तू ही सहारा है ।
भक्तों की यही पुकार है,
जीना यहाँ दुश्वार है ।।३।। सांचा तेरा...

जीओ जीने दो तेरी वाणी है,
अहिंसा तेरी निशानी है ।
तू ही सांचा करतार है,
"गौतम मण्डल" की यही पुकार है ।।४।। सांचा तेरा...

*

*

卐 भक्ति 卐

(तर्ज—सावन का महीना..................)

भक्ति में मनवा हो जाओ रसबोर।
मयूरा रे नाचे जैसे मेघों का सुन शोर ।।टेर।।

मीरा ने विष का था प्याला पिया,
सीता ने अग्नि में था ध्यान किया।
विष अग्नि का देखो चला ना कुछ जोर.... ।।१।।

भक्ति से गौतम कैवल पद पाए,
चन्दना ने दिव्य दान दीप जलाए।
मुक्ति में जाने की, भक्ति है सच्ची डोर.... ।।२।।

हनुमान की थी राम पै भक्ति,
ध्रुव प्रहलाद में इसकी ही शक्ति।
भक्ति की महिमा पै करो तो जरा गौर.... ।।३।।

भक्ति की सरिता में झूम झूम बहना,
उज्ज्वल लहरों में तल्लीन रहना।
भक्ति की ज्योति से मिलेगी दिव्य ठौर.... ।।४।।

卐 नैया पार करो 卐

(तर्ज—करती हूँ तुम्हारा..............

विनती करते हैं जिनवर स्वीकार करो नाथ।
मझधार में हम अटके नैया पार करो नाथ॥
हे वीर जिनेश्वर महावीर जिनेश्वर.......॥टेर॥

भक्तों की तरफ देखो प्रभु बैठे कुछ आश लिये,
कोई चाह नहीं धन वैभव की दिल में तेरा ध्यान किये।
हम दर्शन के प्यासे हैं २ उपकार करो नाथ,
मझधार में हम अटके......॥१॥

ध्याते हैं तुम्हें हम निश-दिन तन-मन से ध्यान में,
फिर भी क्यूं खो गये हम इस उजड़े जहान में।
अब राह हमें दिखला दो २ उद्धार करो नाथ,
मझधार में हम अटके.......॥२॥

ये 'युवक मण्डल' फरयाद लिये आया तेरे द्वार पै,
अब रोशनी दिखला दो जरा मेहर करो हम पै।
अब ज्ञान का दीप जला दो २ भव पार करो नाथ,
मझधार में हम अटके.......॥३॥

卐 दरश दिखा दो 卐

(तर्ज—ये परदा हटा दो ....)

हरि दरश दिखा दो, इस मन को धीर बन्धा दो,
मैं जोड़ूं दोनों हाथ प्रभूजी, आन बचा लो।
मैं जोड़ूं दोनों हाथ प्रभूजी, आन बचा लो ।।टेर।।

नैन हैं प्यासे तेरे दरश को, चैन नहीं ये पाएँ,
चाहे रात हो या दिन ये तो, बाट निहारे जाएँ।
ये आस है प्यासी, बस प्यास बुझा दो।। मैं जोड़ूं ।।१।।

तुम घट-घट के वासी, तुम तो कण-कण में हो समाए,
फिर क्यों तीरथ में जाकर, हम अपना समय गंवाएँ।
हो अन्तर्यामी, मन का अंधियारा दूर भगा दो। मैं जोड़ूं ।।२।।

तेरा काम निराला प्रभूजी, अजब है तेरी माया,
बिन खम्भे आकाश खड़ा है, कहीं धूप कहीं छाया।
माताओं की यह वाणी, हम सबकी विपदा टारो। मैं जोड़ूं ।।३।।

卐 प्रभु दरबार 卐

(तर्ज—साजन मेरा उस..............)

सांचा तेरा दरबार है,
तेरी ही जय जयकार है ।।टेर।।

प्रभु-दर्शन को अखियां तरसी हैं,
मन मन्दिर में मूरत तेरी है ।
जन-जन पर तेरा अधिकार है,
तू ही सबका करतार है ।।१।। सांचा तेरा....

तेरे दर्शन को हम आयेंगे,
सम्यक् ज्योति जलायेंगे ।
कर दिया नाग का हार है,
आया प्रभु जो तेरे द्वार है ।।२।। सांचा तेरा...

जिसने भी तुझको पुकारा है,
जीवन का तू ही सहारा है ।
भक्तों की यही पुकार है,
जीना यहाँ दुश्वार है ।।३।। सांचा तेरा....

जीओ जीने दो तेरी वाणी है,
अहिंसा तेरी निशानी है ।
तू ही सांचा करतार है,
"गौतम मण्डल" की यही पुकार है ।।४।। सांचा तेरा....

***
*

卐 भक्ति 卐

(तर्ज—सावन का महीना................)

भक्ति में मनवा हो जाओ रसबोर ।
मयूरा रे नाचे जैसे मेघों का सुन शोर ।।टेर।।

मीरा नें विष का था प्याला पिया,
सीता ने अग्नि में था ध्यान किया ।
विष अग्नि का देखो चला ना कुछ जोर....।।१।।

भक्ति से गौतम कैवल पद पाए,
चन्दना ने दिव्य दान दीप जलाए ।
मुक्ति में जाने की, भक्ति है सच्ची डोर....।।२।।

हनुमान की थी राम पै भक्ति,
ध्रुव प्रहलाद में इसकी ही शक्ति ।
भक्ति की महिमा पै करो तो जरा गौर....।।३।।

भक्ति की सरिता में झूम झूम बहना,
उज्ज्वल लहरों में तल्लीन रहना ।
भक्ति की ज्योति से मिलेगी दिव्य ठौर....।।४।।

ॐ ओ ! बंगले वाले धनवानो ॐ

(तर्ज—दिल लूटने वाले...............)

ओ बंगले वाले धनवानो, इन दुखियों का दु:ख पहचानो ।
इनकी आहों में आग जले, इनका दु:ख अपना दु:ख मानो ।।टेर।।

ये बच्चे छाछ बिन रोए, तुम रोज उड़ाओ गुलछर्रे ।
ये टूटी टपरी में रहते, तुम रखते अलग अलग कमरे ।।
इनकी नारी फिरे बिन साड़ी, तुम रेशम के परदे तानो ।।१।।

ये रोगी औषध बिन मरते, तुम बिस्कुट कुल्फी खाते ।
ये बच्चे अनपढ़ ही रहते, नहीं फीस के पैसे पाते ।।
तुम पिक्चर औ' पेपर हित पैसे को पानी ज्यों जानो ।।२।।

ये सर्दी में ठिठुरे बच्चे, तुम कश्मीरी कम्बल लाते ।
ये रात दिवस मेहनत करते, फिर भी नहीं अन्न पूरा पाते ।।
तुम कुर्सी तकियों पर बैठे, लाखों पर अपना हक मानो ।।३।।

ये अपनी पीड़ा कहते हैं, गहरी निश्वासें भर-भर के ।
यह भेद क्रान्ति को लाएगा, हम कहते हैं तुम्हें जगा के ।।
यदि इससे बचना हो तो तुम, इनको भी अपना हिस्सा मानो ।।४।।

ये चांदी के जहरीले फन, कहीं न डस लें इस जीवन को ।
जीवनरक्षक जिसको माना, कहीं लूट न ले जीवनधन को ।।
कुछ दान करो, दु:ख दूर करो, यह बात 'कुमुद' की तुम मानो ।।५।।

卐 बाला हिन्दुस्तान की 卐

(तर्ज—आओ बच्चो तुम्हें..............)

मैदानों में लड़ने वाली, जौहर की बलिदान की।
डरने वाली कभी नहीं हम, बाला हिन्दुस्तान की ।।टेर।।

मरदों से हम कम नहीं हैं, आगे बढ़ने वाली हैं,
चूड़ी वाले हाथों में हम खड्ग उठाने वाली हैं।
रणभूमि में डटकर आगे कदम बढ़ाने वाली हैं,
देश, धर्म पर हंसते २ शीष काटने वाली हैं।
चाहे सेना हो तूफानी, क्यों न पाकिस्तान की ।।१।।

झांसी वाली रानी देखो कैसी नूर नूरानी थी,
आजादी की वीराङ्गना थी, रनवट की निशानी थी।
भारत के कोने कोने में फैली यही कहानी थी,
मर्दों में मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।
आज अमर है कीर्ति उनकी, हर स्वर में अभिमान की ।।२।।

दुर्गावती की वीरता ने, नीलाकाश हिलाया था,
धरती सारी काँप उठी थी, सूरज भी शरमाया था।
दोनों हाथों में तलवारें, देख अरि थर्राया था,
घोड़े की थी बाग मुँह में, रण का रंग सवाया था।
हाहाकार मचा सेना में, आशा नहीं रही प्राण की ।।३।।

चितौड़गढ़ की रानी पद्मिनी, जिंदा जली अंगारों में,
जौहर की ज्वालाएँ भभकी, नभमंडल के तारों में।
सूरज बनकर चमक रही है, हिय के नसवर हारों में,
आज हमारा सिर ऊँचा है, नाज हमें उन नारों में।
वीराङ्गनायें हुई हजारों, बाजी लगा दी जान की ।।४।।

राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध बली हनुमान सा जाया था,
सांगा वीर प्रताप मराठा शिवाजी कहलाया था।
गोरा बादल जयमल फत्ता दुर्गादास गुँजाया था,
पृथ्वीराज संयोगिता को जीत स्वयम्वर लाया था।
वीरों की जननी कहलाती "रसिक" हैं कुर्बान की ।।५।।

डरने वाली कभी नहीं हम बाला हिन्दुस्तान की।

卐 कैसा जमाना 卐

(तर्ज—गम दिये मुस्तकिल...............)

एक भूपाल है, एक कंगाल है, क्या बतावें।
अपनी करनी का सब फल पावें ।।टेर।।

एक फूलों की शय्या पर सोता, एक टाट बिछाकर रोता।
एक मौज करे, एक आह भरे, क्या बतावें.............. ।।१।।

एक खाता मिठाई बंगाली, एक खाता दर दर पै गाली।
जैसी करनी करे, वैसी भरनी भरे, क्या बतावें.............. ।।२।।

एक राजा की बनी है रानी, एक बनके खड़ी मेतरानी।
झाड़ू देती फिरे, गलियाँ साफ करे, क्या बतावें.............. ।।३।।

एक मोटर की करता सवारी, एक दर-दर हो फिरता भिखारी।
जैसा कर्म करे, वैसा भोग करे, क्या बतावें.............. ।।४।।

एक सेठानी बनकर बोले, एक कंगाली बनकर डोले।
टुकड़ा दे दो अरे, आंखों नीर झरे, क्या बतावें.............. ।।५।।

हर कवीन्द्र यों ही समझावे, सदा धर्म करे सुख पावे।
मनसा जल्दी फले, वेगी मुक्ति मिले, क्या बतावें.............. ।।६।।

卐 व्यथा जैनि संतान की 卐

(तर्ज—आओ बच्चो तुम्हें..............)

आओ अमीरो तुम्हें सुनाऊँ, व्यथा जैनि सन्तान की।
स्वधर्मी भाई बहिनों की उन्हीं की संतान की ॥
छोड़ो आडम्बर छोड़ो आडम्बर.............. ॥टेर॥

टूटी सी टपरी में रहते मां बच्चे सब साथ हैं,
खाने वाले छः बच्चे पर कमाते दो हाथ हैं।
दिन भर की मजदूरी करके रुपये आते पांच हैं,
पलते और पढ़ते बच्चे, झूठ नहीं पर सांच है।
चलें द्वन्द्व रोटी के खातिर, आपस में खींचातान की,
स्वधर्मी भाई...... .... ॥ १ ॥

कई माताएं भूखी सोकर वक्त दुःख में काटतीं,
पर वो अपनी शान के खातिर दर्द दिल में पालतीं।
पढ़ाती अपने बच्चों को सुखी स्वप्न संवारतीं,
पढ़ लिखकर भी कहां नौकरी बदकिस्मत को डांटतीं।
मिट्टी हो जाती है उनके बड़े बड़े अरमान की,
स्वधर्मी भाई .... ॥ २ ॥

पांच कुंवारी कन्या घर में सोलह बाईस साल की,
मात-पिता की हालत खस्ता शादी के सवाल की।
पूछताछ की कई लड़कों से बात चली धन माल की,
हाय गरीबी हाय गरीबी महंगाई के मार की।

दहेज नहीं दे सकने कारण बाजी देते प्राण की,
स्वधर्मी भाई..।। ३ ।।

फिर भी रहम नहीं उमड़ता धनवानों के उर से,
खाते पीते मौज मनाते गये बीते ये कूर से।
उठा रहे हो लाभ अमीरो गरीबी मजबूर सें,
छत्र छाया ना दे पाए तुम अड़े रहे खजूर से।
तोबा तोबा अरे जैनियो बेवफा धनवान की,
स्वधर्मी भाई..।। ४ ।।

पुण्योदय से धन को पाकर अकड़ रहे अभिमान से,
समझ रहे हो दौलत को ही बढ़कर अपनी जान से।
सोचो समझो सुनो अमीरो खोलो पर्दे कान के,
हमदर्दी तुम बनो दीन के देकर गुप्त दान से।
'भंवर' इसी में हित है अपना स्वधर्मी उत्थान की,
स्वधर्मी भाई बहिनों की उन्हीं की सन्तान की।। ५ ।।

卐 दहेज 卐

(तर्ज—आओ बच्चे तुम्हें..................)

लाखों घर बर्बाद हो गये, इस दहेज की बोली में।
अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पाई डोली में ॥टेर॥

कितनों ने अपनी कन्या के, पीले हाथ कराने में,
कहाँ कहाँ तक मस्तक टेके, आती शर्म बताने में।
जिस पर बीते वो ही जानता, शब्द नहीं वे कहने के,
कितनों ने बेचे मकान हैं, अब तक अपने रहने के।
गिरवी खेत दुकान रख दिये, इस दहेज की बोली में,
अर्थी चढ़ी.................. ॥१॥

मठाधीश अब भी तुम जागो, मानवता की भाषा में,
मूल्य बढ़ाते क्यों लड़कों का, धन पाने की आशा में।
यही तुम्हारा मनुज धर्म क्या, यही अहिंसा प्यारी है,
लड़की वालों की गर्दन पर, चालू रही कटारी है।
आग लगे ऐसे दहेज को, दानवता की खोली में,
अर्थी चढ़ी.................. ॥२॥

अब भी चेतो लड़के वालो, कन्याओं की शादी में,
नहीं बटाओ हाथ इस तरह, तुम ऐसी बर्बादी में।
तुमको भी ऐसा दुःख होगा, जब ऐसा क्षण आयेगा,
अथवा ये बेबस का पैसा, तुम्हें नरक ले जायेगा।
वचन सत्य ये, बुरा न मानो, टिके न पैसा झोली में,
अर्थी चढ़ी.................. ॥३॥

क्यों दहेज की दानव लीला, कर-कर पाप कमाते हो,
अपनी ही बेटी की हत्या का अपयश ले आते हो।
आज जिसे तुम बहू बनाकर, अपने घर में लाते हो,
उस लक्ष्मी को लक्ष्मी सा क्यों आदर न दे पाते हो।
पुत्रवधू को पुत्री समझो, हृदयपटल की होली में,
अर्थी चढ़ी................ ।।४।।

जिस घर में बेटी सम बहू को आग लगाई जायेगी,
वह कन्या सचमुच कन्या बन कर्ज़ चुकाने आयेगी।
विष की बूंदें अमृत घट से यदि निकाली जायेंगी,
फिर तुम बोलो सुधा कहाने वाली क्या कहलाएगी।
बेटी बहू में फर्क न समझो, रखो एक ही टोली में,
अर्थी चढ़ी................ ।।५।।

卐 व्यथा जैनि संतान की 卐

(तर्ज—आओ बच्चो तुम्हें..............)

आओ अमीरो तुम्हें सुनाऊँ, व्यथा जैनि सन्तान की।
स्वधर्मी भाई बहिनों की उन्हीं की संतान की।।
छोड़ो आडम्बर छोड़ो आडम्बर..............।।टेर।।

टूटी सी टपरी में रहते मां बच्चे सब साथ हैं,
खाने वाले छः बच्चे पर कमाते दो हाथ हैं।
दिन भर की मजदूरी करके रुपये आते पांच हैं,
पलते और पढ़ते बच्चे, झूठ नहीं पर सांच हैं।
चलें द्वन्द्व रोटी के खातिर, आपस में खींचातान की,
स्वधर्मी भाई.. ।। १ ।।

कई माताएं भूखी सोकर वक्त दुःख में काटतीं,
पर वो अपनी शान के खातिर दर्द दिल में पालतीं।
पढ़ाती अपने बच्चों को सुखी स्वप्न संवारतीं,
पढ़ लिखकर भी कहां नौकरी बदकिस्मत को डांटतीं।
मिट्टी हो जाती है उनके बड़े बड़े अरमान की,
स्वधर्मी भाई.. ।। २ ।।

पांच कुंवारी कन्या घर में सोलह बाईस साल की,
मात-पिता की हालत खस्ता शादी के सवाल की।
पूछताछ की कई लड़कों से बात चली धन माल की,
हाय गरीबी हाय गरीबी महंगाई के मार की।

दहेज नहीं दे सकने कारण बाजी देते प्राण की,
स्वधर्मी भाई.. ॥ ३ ॥

फिर भी रहम नहीं उमड़ता धनवानों के उर से,
खाते पीते मौज मनाते गये बीते ये कूर से ।
उठा रहे हो लाभ अमीरो गरीबी मजबूर से,
छत्र छाया ना दे पाए तुम अड़े रहे खजूर से ।
तोबा तोबा अरे जैनियो बेवफा धनवान की,
स्वधर्मी भाई.. ॥ ४ ॥

पुण्योदय से धन को पाकर अकड़ रहे अभिमान से,
समझ रहे हो दौलत को ही बढ़कर अपनी जान से ।
सोचो समझो सुनो अमीरो खोलो पर्दे कान के,
हमदर्दी तुम बनो दीन के देकर गुप्त दान से ।
'भंवर' इसी में हित है अपना स्वधर्मी उत्थान की,
स्वधर्मी भाई बहिनों की उन्हीं की सन्तान की ॥ ५ ॥

卐 कौन सुनेगा 卐

(तर्ज—आने वाले कल की तुम................)

कौन सुनेगा आज यहाँ पर-पीर को ।
भूल चुका है आज मनुज श्री राम कृष्ण महावीर को ।

कभी जटायु की सेवा में राम बलि बलि जाते थे ।
घायल पक्षी को गोदी में ले आंसू टपकाते थे ।।
आज खड़ा है भाई आगे, भाई ले शमशीर को ।।१।।

कभी सुदामा के चावल खा, नटवर हर्षित होते थे ।
दीन हीन ब्राह्मण के पग को, नयन-नीर से धोते थे ।।
आज दुःखी को ठुकराते हैं, धिक्कारें तकदीर को ।।२।।

कभी वीर चन्दनबाला से, उड़द बाकुले पाते थे ।
चण्डकोशिया विष के बदले, अमृत को बरसाते थे ।।
आज मनुज बरषाते हैं, कटुवाणी के विष नीर को ।।३।।

राम कृष्ण महावीर की माला, जपने वालो सुन लेना ।
इनके उत्तम जीवन से कुछ, शिक्षाएँ भी चुन लेना ।।
'कुमुद मुनि'' कहे जीवन बदलो, पिओ प्रेम के नीर को ।।४।।

卐 झूठा प्यार 卐

(तर्ज—सैंया झूठों का..................)

झूठी दुनिया का झूठा सब प्यार निकला,
सगा समझा था वही दगादार निकला।
खोज देखा न कोई दिलदार निकला ॥टेर॥

असली घी दूध तन को खिलाया था,
कसरत कर-कर के मजबूत बनाया था।
किन्तु होते ही रोग यह हार निकला ॥१॥

चढ़ते यौवन में धन भी कमाया था,
आगे खायेंगे ऐसा जंचाया था।
किन्तु बीच में ही इज्जत बिगाड़ निकला ॥२॥

प्राण देकर भी पुत्रों को पाला था,
सुख की आशा में ब्याह कर डाला था।
किन्तु बहुओं का और ही विचार निकला ॥३॥

प्रेम स्वजनों से काफी बनाया था,
काम आयेंगे दिल यों टिकाया था।
(पर)मौका आया तो उनमें भी खार निकला ॥४॥

"धन मुनि" कहता धर्म एक प्यारा है,
झूठी दुनिया में सच्चा सहारा है।
धारा, उस ही का बेड़ा भव-पार निकला ॥५॥

❋

❋❋❋❋❋

卐 रिश्वत 卐

(तर्ज—इक परदेशी मेरा दिल..............)

पूजा हो रही है मेरी हर स्थान में ।
फैल गई मैं तो सारे ही जहान में ।। टेर ।।

चलता नहीं मेरे बिना मास्टरों का काम है ।
डाक्टरों का निकल जाता मेरे आगे राम है ।।
टी० टी० ठेकेदार भी हैं मेरी छान में.......।।१।।

अड्डे हैं खास मेरे आफिस और थाने ।
लाइसेन्स परमिट कन्ट्रोल की दुकानें ।।
कोर्ट और कचेरी भी हैं मेरी आन में.....।।२।।

दुनियां लगाए चाहे कितने ही नारे ।
राजकर्मचारी सारे बने मेरे प्यारे ।।
जरा भी न बदनामी लाते ध्यान में.......।।३।।

ब्याह शादियों में भी है बोल-बाला ।
मठों मंदिरों में भी जा हाथ मैंने डाला ।।
मस्त है पुजारी मेरे गीत गान में.......।।४।।

रोते को हंसाना और हंसते को रुलाना ।
खेल बाएँ हाथ का है जेल से छुड़ाना ।।
कामधेनु मैं हूँ मन चाहे दान में.......।।५।।

***

卐 शक्ति का नाम : नारी 卐

कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है।
सबको जीवन देने वाली, मौत भी तुझसे हारी है ।।टेर।।

सतियों के नाम से तुझे जलाया, मीरा के नाम से जहर पिलाया २ ।
सीता जैसी अग्नि परीक्षा, अब जीवन में जारी है ।।१।।

इल्म महोदर में, दिल दिमाग में, किसी बात में कम तो नहीं है २ ।
पुरुषों जैसे कामों में अधिकारों की अधिकारी है ।।२।।

बहुत हो चुका अब मत डरना, तुझे इतिहास बदलना होगा २ ।
नारी को कोई कह ना पाये, अबला है, बेचारी है ।।३।।

卐 कौन सुनेगा 卐

(तर्ज—आने वाले कल की तुम...............)

कौन सुनेगा आज यहाँ पर-पीर को ।
भूल चुका है आज मनुज श्री राम कृष्ण महावीर को ।

कभी जटायु की सेवा में राम बलि बलि जाते थे ।
घायल पक्षी को गोदी में ले आंसू टपकाते थे ।।
आज खड़ा है भाई आगे, भाई ले शमशीर को ।।१।।

कभी सुदामा के चावल खा, नटवर हर्षित होते थे ।
दीन हीन ब्राह्मण के पग को, नयन-नीर से धोते थे ।।
आज दुःखी को ठुकराते हैं, धिक्कारें तकदीर को ।।२।।

कभी वीर चन्दनबाला से, उड़द बाकुले पाते थे ।
चण्डकोशिया विष के बदले, अमृत को वरसाते थे ।।
आज मनुज वरषाते हैं, कटुवाणी के विष नीर को ।।३।।

राम कृष्ण महावीर की माला, जपने वालो सुन लेना ।
इनके उत्तम जीवन से कुछ, शिक्षाएँ भी चुन लेना ।।
'कुमुद मुनि" कहे जीवन बदलो, पिओ प्रेम के नीर को ।।४।।

卐 झूठा प्यार 卐

(तर्ज—सैंया झूठों का...............)

झूठी दुनिया का झूठा सब प्यार निकला,
सगा समझा था वही दगादार निकला।
खोज देखा न कोई दिलदार निकला ।।टेर।।

असली घी दूध तन को खिलाया था,
कसरत कर-कर के मजबूत बनाया था।
किन्तु होते ही रोग यह हार निकला ।।१।।

चढ़ते यौवन में धन भी कमाया था,
आगे खायेंगे ऐसा जंचाया था।
किन्तु बीच में ही इज्जत बिगाड़ निकला ।।२।।

प्राण देकर भी पुत्रों को पाला था,
सुख की आशा में ब्याह कर डाला था।
किन्तु बहुओं का और ही विचार निकला ।।३।।

प्रेम स्वजनों से काफी बनाया था,
काम आयेंगे दिल यों टिकाया था।
(पर)मौका आया तो उनमें भी खार निकला ।।४।।

"धन मुनि" कहता धर्म एक प्यारा है,
झूठी दुनिया में सच्चा सहारा है।
धारा, उस ही का बेड़ा भव-पार निकला ।।५।।

❋

❋❋❋❋

卐 दीक्षार्थिनी को शिक्षा 卐

(तर्ज—झंडा ऊँचा रहे हमारा..........)

संयम उज्ज्वल रहे मेरी बहना, सेवाव्रत का पहनो गहना ।।टेर।।

गुरुणीजी को शीश नमाओ, कर-कर भक्ति ज्ञान कमाओ ।
जिन आगम का है यही कहना.....संयम ।।१।।

विनय बनेगा जीवन भूषण, अहंकार का छोड़ो दूषण ।
मोह मदिरा से दूर ही रहना...... संयम ।।२।।

वृद्ध तपस्वी संत हैं रोगी, इनकी व्यावच खूब करोगी ।
ग्लानी औ' आलस तज देना.......संयम ।।३।।

जिन शासन की ज्योति बनकर, धर्म प्रचार करोगी घर घर ।
छः काया की करुणा करना ... संयम ।।४।।

मन वश करते मिटे विकलता, जीतो परिषह मिले सफलता ।
सम्यक् रस धारा में बहना ......संयम ।।५।।

लाखों कष्ट सामने आयें, रंच - मात्र भी डिग न जायें ।
विपदा कष्ट धर्महित सहना...... संयम ।।६।।

रोते छोड़ो परिजन भ्राता, और जन्म मत करना नाता ।
सिद्धि अमरपद तुम ले लेना.......संयम ।।७।।

सत्य बनोगी सरल बनोगी, दृढ़ थिर चित निर्भीक बनोगी ।
मिथ्याकण रज मात्र बचे ना.......संयम ।।८।।

"प्यारे" मीठे फले मनोरथ, सहज सुगम्य बने मुक्ति पथ ।
रायचूर संघ का यही कहना...... संयम ।।९।।

•※—※•

卐 संयम : सुखों की लड़ी 卐

(तर्ज—जिन्दगी की न टूटे लड़ी)

संयम की हैं सतरह लड़ी ।
उसकी टूटे न इक भी कड़ी ·····।।टेर।।

ऽऽऽ सब परिवार छोड़ रही, संयम तुम तो धार रही ।
सत्तावीस गुणों को ग्रहण, जीवन उज्ज्वल बनाना सही ।।
साथ तोड़ना कर्मों की लड़ी······।।१।।

ऽऽऽ लाख कष्ट आवे तो क्या, मरने से बढ़कर कुछ भी नहीं ।
यह बातें आगम में कही, महापुरुषों से हमने सुनी है सही ।।
दिल में रखना क्षमा हर घड़ी······।।२।।

ऽऽऽ ऐसे दुनियाँ में सच ही कहूँ, संयम से बढ़ के शांति नहीं ।
संयम से आत्मा तिरे, उसमें नहीं है भ्रान्ति नई ।।
समभाव से रहना हर घड़ी······।।३।।

ऽऽऽ पृथ्वी सम बनना है तुम्हें, जिससे देव यों चूमे चरण ।
महापुरुषों के आदर्शों में, करना है तुमको अपना मनन ।।
प्राप्त करना सुखों की लड़ी······।।४।।

卐 अंगुलियों की मिटिंग 卐

(तर्ज—जब तुम्हीं चले..............)

अंगुलियाँ मिलो अनेक अंगूठा एक, मिटिंग भराती ।
बड़प्पन की छिड़ी कहानी ।।टेर।।

मैं लेख चित्र करवाती हूँ, पथिकों को पंथ बताती हूँ ।
प्रथम अंगुली इसी हेतु कहलानी.......।।१।।

मैं मीठी वीणा बजाती हूँ, चिमटी से रंग दिखाती हूँ ।
इसीलिये तो सबसे बड़ी लखानी.......।।२।।

मैं करती देवों का पूजन, स्वस्तिक नहीं होता मेरे बिन ।
सब मंगल कार्यों की हूँ मैं ठकुरानी.......।।३।।

मैं कानों में खुजलाती हूँ, संकट में सिर कटवाती हूँ ।
प्रभु स्मरण में मुखिया सबने जानी.......।।४।।

चारों ने ऐसे खूब कहा, अंगूठा बिल्कुल मौन रहा ।
अब बोला मैं सबका हूँ अगवानी.......।।५।।

जितना भी काम तुम्हारा है मेरा सब ही में सहारा है ।
समझ गईं अंगुलियां बड़ी सयानी...... ।।६।।

अंगुलियां तीर्थ चार कहे, अंगूठे सम गुरुराज रहे ।
युक्ति मनोहर "धनमुनि" की मनमानी....।।७।।

卐 बगुला भगत 卐

(तर्ज—सावन का महीना..................)

शुद्ध हृदय हो पल में, हो जाता है कल्याण।
बगुला भगतों को ना, मिल सकता है भगवान् ।।टेर।।

हाथ में माला, दिल है काला।
भला ऐसी माला से क्या होने वाला।।
दिल में पाप भरा है, और मुँह से कहते राम... बगुला...।।१।।

मन्दिर में जाते हो, प्रभु गीत गाते हो।
पर मौका लगने पर जूतियाँ चुराते हो।।
ऐसी भक्ति हरगिज, ना बन सकती वरदान... बगुला...।।२।।

पीने में धोखा, खाने में धोखा।
दुनियां की हर वस्तु धोखा ही धोखा।।
जब जीवन है इक धोखा, फिर कैसे हो उत्थान... बगुला...।।३।।

लोभ और कपट के, विष को जला दो।
शुद्ध हृदय से, भक्ति धन कमा लो।।
हेरा-फेरी छोड़ो, कहते हैं मुनि ज्ञान... बगुला...।।४।।

卐 माटी के पुतले 卐

(तर्ज—यही है तमन्ना दिल में अगर..........)

ए माटी के पूतले तू रोता है क्यों,
ये नर-तन तेरे साथ जाता नहीं ।
जिसको अपना तू कहता, पराये हैं सव,
इनसे पल भर भी नेहा लगाना नहीं ।।टेर।।

भाई बन्धु वहन साथी, मतलब के हैं,
मृत्यु के बाद कोई साथ जाता नहीं ।
झूठे आंसू बहाकर बुलाते सभी,
पर तेरे साथ कोई भी जाता नहीं ।
सब बुलाकर चिता में जलाते तुझे,
कोई तुझको चिता से बचाता नहीं ।।
जिसको..........।।१।।

फूल खिलते हुए माली हँसता तो है,
फूल गिरते हुए देख रोता नहीं ।
सुख में साथी सभी तेरे हँसते तो हैं,
तेरे दु:ख में ये कोई भी रोता नहीं ।
रागी द्वेषी जगत में बनाते हैं सब,
वीतरागी कोई भी वनाता नहीं ।।
जिसको.......।।२।।

नरतन पाया है तूने प्रभु गुण तो गा,
तेरे दुःख की घड़ी भी बदल जायेगी।
उसकी महिमा का गुण-गान कर ले अगर,
मौत आ भी गई तो वो टल जायेगी।
तू भज ले रे मन और सुमर ले प्रभु,
तेरे चमड़े की जिह्वा का भरोसा नहीं ।।
जिसको·······।।३।।

॥ निकल गई सारी जिन्दगी ॥

(तर्ज—पड़ियो पानी में ....)

सोते सोते ही निकल गई सारी जिन्दगी ।
सारी जिन्दगी हो भैया त्यारी जिन्दगी ।।टेर।।

जन्म लेते ही सबसे पहले तूने रुदन मचाया,
आंख्या भी तो खुल नहीं पाई, भूख भूख चिल्लाया ।
खाते खाते ही निकल गई सारी जिन्दगी ।।१।।

धीरे धीरे बढ़ा बुढ़ापा, डग - मग डोले काया,
सब के सब रोगों ने देखो, डेरा खूब जमाया ।
रोगों रोगों में निकल गई सारी जिन्दगी ।।२।।

जिसको तू अपना समझा है, वह दे बैठा धोखा,
प्राण जाने पर जल जायेगा, यह गाड़ी का खोखा ।
खोखा ढोते ही निकल गई सारी जिन्दगी ।।३।।

स्वर्ग नरक का झगड़ा झूठा, परभव किसने देखा,
मुक्ति की है कोरी कल्पना, किसने जाकर देखा,
शंका शंका में निकल गई सारी जिन्दगी ।।४।।

प्रभु भजन तो कर नहीं पाया, हाय हाय ही कीना,
आज करूँगा, कल कर लूंगा, बहुत बरस हैं जीना ।
बातों बातों में गुजर गई सारी जिन्दगी ।।५।।

भाई से झगड़ा, पति से झगड़ा, सास ससुर से झगड़ा,
भला बुरा कुछ भी नहीं सोचा, किया सभी से रगड़ा ।
रगड़ों झगड़ों में गुजर गई सारी जिन्दगी ।।६।।

**

卐 कब होगा दर्शन 卐

(तर्ज—चल उड़ जा रे पंछी............)

अब जाते हैं गुरुजी कि फिर कब होगा दर्शन पाना........
अब जाते हैं............ ।। टेर ।।

चौमासे में मेघ बने थे वचनामृत बरसाया,
धर्मवृक्ष जो सूख रहा था सिंचन कर सरसाया,
ज्ञान तपस्या फल - फूलों से सब का मन हरषाया,
आज चले तुम छोड़ के गुरुवर थानक हुआ विराना ।। १ ।।

कहां हैं अब वे प्रवचन झड़ियां दर्शन को कहाँ जावें,
गलत रूढ़ियां कौन निकाले, मंगलिक कहाँ पै पावें,
हुआ अधीर नगर यह सारा, धैर्य कहाँ से लावें,
सुख-साता में रहो सदा पुनः याद हमारी लाना ।। २ ।।

भूलें कैसे तप के उत्सव दर्शक जन के मेले,
कौन बोध दे जिन पथ का अब कौन वन्दना झेले,
सेवा की रही चाह अधूरी, यह दुःख मन को ठेले,
हमें भूल नहीं जाना फिर सेवा का लाभ दिलाना ।। ३ ।।

अन्तिम अभिलाषा

(तर्ज—पदम प्रभु··· ···········)

नाथ मैं तो अन्त समय यही चाऊं ।
कर करणी को फल कुछ पाऊं ।। टेर ।।

काम क्रोध मद लोभ निवारू, तृष्णा दूर हटाऊं ।
आरम्भ परिग्रह पास न राखूं, ममता मोह मिटाऊं ।।१।।

राग द्वेष की भावना त्यागूं, मैत्री भाव बढ़ाऊं ।
निज पापां री करू आलोयणा, सब ही जीव खमाऊं ।।२।।

मात पिता और कुटुम्व कवीलो, नारी सूं मोह हटाऊं ।
विषय वासना त्यागूं हृदय सूं आतम-ज्योति जगाऊं ।।३।।

अरिहन्तदेव, निर्ग्रन्थ गुरु पर, दृढ़ विश्वास जमाऊं ।
दया धर्म को सच्चो शरणों, शुद्ध समकित उपजाऊं ।।४।।

नरवर काया त्यागतां अपणी, दिल में नहीं घबराऊं ।
श्वास-श्वास में ध्यान हो थांरो, तो रग रग माहीं रमाऊं ।।५।।

परभव मांहीं जो गति पाऊं, रंक या राजा हो जाऊं ।
सव बातां थांरी पर इक म्हारी, जिणजी रो धर्म तो पाऊं ।।६।।

इण भव नहीं तो पर भव मांही, ऐसी शक्ति पाऊं ।
अष्ट कर्मदल जीत "जीतमल" अजर अमर होय जाऊं ।।७।।

※×※

卐 चाय रानी 卐

(तर्ज—रेशमी सलवार...............)

छोड़ दे इन्सान संग चाय रानी का,
हो रहा बर्बाद धन राजधानी का ॥ टेर ॥
इस लाल - लाल पानी से, क्यों मुख के नूर हटाता,
क्यों तन में खुश्की बढ़ाता, तू व्यर्थ में अपना घटाता
आयु ज़िन्दगानी का.......... ॥ १ ॥

बिस्तर पर लेटे बाबू, चाय की प्याली पीते,
चाय बिना नहीं रहते, ये इसी सहारे जीते
खेल दीवानी का............. ॥ २ ॥

ये बूढ़े बच्चे युवक, सभी चाय-चाय को रटते,
इन गर्म मीठे प्यालों से, तुम दूर स्वास्थ्य से हटते
ख्याल कर हानि का...... ॥ ३ ॥

चाय देश को निर्बल करती, अरबों पर आग लगाती,
घी दूध दही मक्खन का, खाना सर्व छुड़ाती
शानदार जानी का.......... ॥ ४ ॥

अब छोड़ चाय का पीछा, तू भारत लाल कहाये,
सात्विक जीवन बना ले, यों गणेश मुनि समझाये
कहानी ज्ञानी का.............. ॥ ५ ॥

हेम की हसित लहरें

गुजराती-विभाग

卐 वंदन 卐

(तर्ज—वादा न तोड तू वादा................)

तुभ्यं नमो, नमो नमो, वीरं नमो, नमो नमो
मारुं दिल तुझने पुकाऽऽऽरे.......... ।। टेर ।।

नागे अंगूठे तुझने जहरज दीधो,
संभुजय शब्द क्रोधिने क्षमाशील बनाव्यो होऽऽ हो २
तारी भक्ति कषाय भुलाऽऽऽवे.......... ।। १ ।।

गौतम नो गर्व थारा, शरणे भूलायो,
संशय मिटाई सांचो राह बताव्यो..........होऽऽहो २
तारी भक्ति आतमने जगाऽऽऽवे....... ।। २ ।।

चन्दना भूली दु:खने, जो तारे तुझने,
बाकुड़ा बोरावी तेने, संयम भाव जगाव्यो......होऽऽहो २
तारी भक्ति संसार जगाऽऽऽवे.......... ।। ३ ।।

तारा आदर्शो सहुना जीवन सुधारे,
निजानन्द मां आवी वीरनां राह स्वीकारे.......होऽऽहो २
तारी भक्ति मोक्ष बताऽऽऽवे.......... ।। ४ ।।

***

卐 प्रभु मारा वंदन 卐

(तर्ज—तु ही मेरे मन्दिर..................)

गमे ते स्वरूपे गमे त्यां विराजो, प्रभु मारा वंदन - २
भले ना निहालु निजरथी तमोने मले गुण तमारा
सफल मारु जीवन.................. ।। टेर ।।

जनम जे असंख्या मल्या ते गुमाव्या,
धरम ना कर्यो के ना तमने संभार्या,
हवे आ जनममां करू हुं विनंति,
स्वीकारो तमे तो तूटे मारा बंधन.......गमे............ ।। १ ।।

मने होंश एवी उजालं जगतने,
किरण ना मले, मारा मनना दीपकने,
तमे तेज आपो जले एवी ज्योति,
अमर पंथना सहुने करावे जे दर्शन ....गमे.......... ।। २ ।।

卐 पतितपावन 卐

(तर्ज—तुम्हीं हो माता पिता………………)

पतितपावन अधम उद्धारण,
भव-दुःखभंजन प्रभु तमे छो………॥ टेर ॥

भूल्या पड़या अमे भव अटवीमां, दिशा ना सूझे चतुर गतिमां,
दिशा बतावे दयालु देवा, कृपा करो अमे रंकने जेवा ॥ १ ॥

चंदनबालाने आपे उगारी, सती सुलसाने लीधी संभाली,
पतितपावन विरुद्धरावी, अमोने केम दीधा बिसारी ॥ २ ॥

चंडकौशिकना झेर उतारी, मुक्तनी युक्ति दीधी बतावी,
विनती मारी दिलमां धारी, भवकूप पड़ता लेजो विचारी ॥३॥

इन्द्रजालियो कहे तारे आव्यो, एवा गौतमनो गर्व रे गाल्यो,
मुझ जीवनना तिमिर टाली, प्रकाश प्रगटावो अन्तर्यामी ॥ ४ ॥

मेघकुमारने पड़ता बचाव्यो, स्थिर करीने संयम स्थाप्यो,
अमारो वांक एवो कयो आव्यो, करीए क्यां जइने प्रभुजी पुकारो।५।

जेवा तेवा तोये अमे तमारा, शरणागतने देजो सहारा,
अधम-उद्धारक पदने पामी, शिष्याने लेजो भवथी उगारी ॥ ६ ॥

卐 कायाने लाड लडावुं 卐

(तर्ज—यशोमति मैया से..............)

मारी प्यारी कायाने, लाड हूँ लडावु ।
प्रभु तारे गीतो, क्यारे हूँ गावु.......।।टेर।।

सवारे उठीने हूँ तो न्हावा धोवा लागू,
टाप - टीप करवा पाछल वे कलाक लगाऊँ ।
सारी रीते नाश्तो करी ऽऽऽ दुकाने हूँ जाऊँ.......।।१।।

दुकाने बेसीने हूँ पैसाने पूजु,
करोडपति थवा काजे पापथी न धूजु ।
रात दिवस पैसा काजे ऽऽऽ परषेवो पाडु.......।।२।।

बारह वागे त्यार हूँ जमवाने आवु,
नित नई मिठाई ने मालपुआ खावु ।
जम्या पछी वे घडी ऽऽऽ आराम करवा मांगु.......।।३।।

सांज पडे त्यारे फरवा हूँ जावु,
वाग वगीचा वली थियेटरमां जावु ।
सूतां पेला एक बार ऽऽऽ चा गटकावु.......।।४।।

हवे तो बताओ प्रभु समय मनें क्यां छे,
विनवु छु पाय पडी, बेकर जोडी तुझने ।
पार करी देजो मुझने ऽऽऽ मोटो भगत गणावु....।।५।।

•※—※•

卐 लगनी लागी छे 卐

(तर्ज—हम तुम चोरी से..............)

लगनी लागी छे के अगनी जागी छे, तारा मिलननी प्रभु ।
पले पल झंख्या करूं तने के..........लगनी..........।।टेर।।

घेलुं लाग्युं मुझने, हूं क्यारे तुझने भेटुं,
थारा पावन खोले, मीठी नींदरमां लेटुं ।
सपनामां रोज हूं-रोज हूं, निरख्या करूं तने के....।।१।।

हलवा हलवा हाले, आ हैयाना धबकारा,
घडिये घडिये दिलमां वागे तारा झणकारा ।
अंतरना गोखमां, गोखमां कल्प्या करूं तने के....।।२।।

जाय भले जन्मारो, पण धीरज हूं ना हारूं,
मरवानी वेलाये पण, तारो नाम पुकारूं ।
जीवुं हूं ज्यां सुधी-त्यां सुधी, समर्या करूं तने के....।।३।।

卐 प्रभु एवुं देजो 卐

(तर्ज—होठों से छू लो ....)

समताथी दर्द सहुं, प्रभु एवु बल देजो।
मारी भक्ति सांची होय, तो आटलुं फल देजो ।।टेर।।

कोई भवमाँ बांधेला, मारा कर्मो जाग्या छे।
कायाना दर्द रूपे, मने पीडवा लाग्या छे।
आ ज्ञान रहे ताजु एवं सींचन जल देजो ...समता ... ।।१।।

दर्दोनी आ पीडा, सेवाथी मटशे नहीं।
कल्पांत करूँ तो पण, आ दुःख तो घटशे नहीं।
दुरध्यान नथी करवु एवु निश्चय बल देजो....... ।।२।।

आ काया अटकी छे, नथी थातां तुझ दर्शन।
ना जई सकुं सुणवाने, गुरुणी वाणी पावन।
उपाश्रय जावानुं, फरीने अंजल देजो....... ।।३।।

नथी थाती धर्मक्रिया, एनो रंज घणो मनमां।
हैयु तो झंखे छे, पण शक्ति नथी तनमां।
मारी होंश पूरी थाये, एवो शुभ अवसर देजो....... ।।४।।

छोने आ दर्द वधे, हूँ मौत नहीं मांगू।
वलि छेल्ला श्वास सुधी, हूँ धर्म नहीं त्यागु।
रहे भाव समाधिनो, एवी अंतिम पल देजो....... ।।५।।

卐 आतम-धुन 卐

अलख निरंजन आतम ज्योति, संतों तेनु ध्यान धरो ।
आ कायामां चेतन हीरो, भूली कयां भवमांही फरो ।।टेर।।

स्थिर उपयोगे सूरता लाधी, भूलाणी दुनियादारी ।
रंगायो अनुभवना रंगे, प्रगटी ज्योति जयकारी ....।।१।।

ध्यान धारणा आतमपदनी, करतां भ्रमणा मिट जावे ।
आत्मतत्त्वनी श्रद्धा थावे, आनंद अनहद उर आवे ....।।२।।

विषया - रस विष सरखो लागे, चैन पड़े नहीं संसारे ।
जन्म मरण पण सरीखा लागे, आतम पद परखे त्यारे ....।।३।।

हल्को नहि भारे नहि चेतन, केवलज्ञान तणो दरीयो ।
सोहम् सोहम् जे जन भावे, ते भवसागरथी तरीयो ....।।४।।
अलख निरंजन .... ।

卐 कायाने लाड लडावुं 卐

(तर्ज—यशोमति मैया से................)

मारी प्यारी कायाने, लाड हूँ लडावु ।
प्रभु तारे गीतो, क्यारे हूँ गावु.......।।टेर।।

सवारे उठीने हूँ तो न्हावा धोवा लागू,
टाप - टीप करवा पाछल बे कलाक लगाऊँ ।
सारी रीते नाश्तो करी ऽऽऽ दुकाने हूँ जाऊँ.......।।१।।

दुकाने बेसीने हूँ पैसाने पूजु,
करोडपति थवा काजे पापथी न धूजु ।
रात दिवस पैसा काजे ऽऽऽ परषेवो पाडु.......।।२।।

बारह वागे त्यार हूँ जमवाने आवु,
नित नई मिठाई ने मालपुआ खावु ।
जम्या पछी बे घडी ऽऽऽ आराम करवा मांगु.......।।३।।

सांज पडे त्यारे फरवा हूँ जावु,
बाग बगीचा वली थियेटरमां जावु ।
सूतां पेला एक बार ऽऽऽ चा गटकावु.......।।४।।

हवे तो बताओ प्रभु समय मने क्यां छे,
विनवु छु पाय पडी, बेकर जोडी तुझने ।
पार करी देजो मुझने ऽऽऽ मोटो भगत गणावु....।।५।।

०※—※●

卐 लगनी लागी छे 卐

(तर्ज—हम तुम चोरी से················)

लगनी लागी छे के अगनी जागी छे, तारा मिलननी प्रभु ।
पले पल झंक्या करूं तने के·········लगनी···········।।टेर।।

घेलु लाग्यु मुझने, हूं क्यारे तुझने भेंटु,
थारा पावन खोले, मीठी नींदरमां लेटुं ।
सपनामां रोज हूं-रोज हूं, निरख्या करूं तने के....।।१।।

हलवा हलवा हाले, आ हैयाना धबकारा,
घडिये घडिये दिलमां वागे तारा भणकारा ।
अंतरना गोखमां, गोखमां कल्प्या करूं तने के....।।२।।

जाय भले जन्मारो, पण धीरज हूं ना हारूं,
मरवानी वेलाये पण, तारो नाम पुकारूं ।
जीवु हूं ज्यां सुधी-त्यां सुधी, समर्या करूं तने के....।।३।।

卐 धर्म बिना कौन तारे 卐

(तर्ज—ओ साथी रे ·········)

आ जगमां रे ऽऽऽ धर्म विना कौन तारे........
पापोथी, नर्कोथी, तिर्यंचना दु:खो थी,
धर्म बिना कौन उवारे······धर्म ।। टेर ।।

केवारे दु:खो सह्या छे नरके, सांभलता कंपारी छूटे,
परमाधर्मी देवो आवी, हरदम मारे रे कूटे,
वित्यां जे दिवसो ते (२) मारो तो मन जाने,
बीजाओ केम ते जाणे······धर्म बिना·······।।१।।

तिर्यंचगतिमां गयो अनंत बार, दु:ख त्यां घणु २ पाम्यो,
ताडन ने तर्जन, छेदन ने भेदन, परतंत्रपणे रे रीबायो,
तिर्यंचगतिमां (२) हवे जवु नथी,
तो धर्मनी श्रद्धाने धारो······धर्म······।।२।।

संसारी सुखो क्षणिक जानो, पाछल छे दु:खनो दरियो,
सिद्धप्रभुना सुखो छे शाश्वत, तेमां नथी दु:खनो छायो,
मेलववा माटे (२) जिनमार्गे आवो,
कर्मना भुक्का उडावो रे······धर्म·······।।३।।
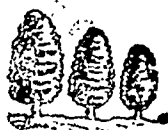
卐 पर्व पर्युषण 卐

(तर्ज—सावन का महिना..........)

पर्व पर्युषण आव्यां, आनन्द छे चारों ओर ।
गुरु तमारी वाणी सुणवा, नाचे मननो मोर ।। टेर ।।
उपदेश अमृतनो, मेहूलो बरसावो ।
नय - निक्षेपनो भेद बतावो ।
व्यख्यान-वाणी सुणवा, चित्तडूं बन्यु चकोर... गुरु... ।।१।।
जैन आगमना सूत्रो संभलावो ।
आगमनी आज्ञा शु छे, ते समझावो ।
सुवास तमारा गुणनी, फैलानी चारे कोर... गुरु... ।।२।।
शास्त्रोना सुन्दर आपो सिद्धांतो ।
प्रभु महावीरनी संभलावो वातो ।
आगमनी वातलडीमां, डोलावो दिलना दोर... गुरु... ।।३।।
अज्ञान - तिमिर दूर हटावो ।
ज्ञानामृतनुं पान करावो ।
गुरु तमारा वचननोनी, छाई धर्मघटा घनघोर... गुरु... ।।४।।
स्याद्वाद सुन्दर रीते संभलावो ।
मनुष्यकर्तव्यनुं भान करावो ।
कठिन अमारा कर्मो, करे छे शोर बकोर... गुरु... ।।५।।
धन्य धन्य भाग्य, ज्ञानी गुरुवर मलीया ।
सकल संघने हैये आनन्द भरीया ।
ये देखीने 'गणेश' ना दिलनो, नाची रह्यो मन मोर... गुरु... ।।६।।

***

卐 केम करि गाऊँ 卐

(तर्ज—श्याम तेरी बंसी················)

शब्दमां समाय नहीं, एवु तू महान ।
केम करी गाऊँ प्रभु तारा गुणगान ।।
गजु नथी-गजु नथी मारु एवु कहे आ जबान ।। टेर ।।

होऽऽऽ···फूलडाना बगीचामां खिले घणा फूलो ।
सूंघवा आवे ने भ्रमर करे भूलो ।।
एम तारी सुरभी भुलावे मारो भान ।।केम···१।।

होऽऽऽ···अम्बरमां चमके असंख्य सितारा ।
पार नहीं पामे एने कोई गणनारा ।।
गुण तारा जादा ने थोडुं मारुं ज्ञान ।।केम···२।।

होऽऽऽ··वण थंभ्या मोजा आवे, सरोवरने तीरे ।
जोता जोता मनडुं धराय ना लगी रे ।।
एक थकी एक थारा ऊँचा परिणाम ।।केम···३।।

होऽऽऽ······पुरुं तो पुराय नहीं, कल्पनाना रंगो ।
हरी जाय बधा मारा मनना तरंगो ।।
अटकीने२ उभु रहे मारू अनुमान ।।केम···४।।

*
*****
*

卐 तूं तो आराधना करी ले 卐

(तर्ज—निर्बल की लड़ाई बलवान से..........)

तारी एक एक पल जाय लाखनी,
तूं तो आराधना करी ले प्रभु नामनी,
तारी जिन्दगी छे चार दिननी चांदनी,
तूं तो आराधना करी ले प्रभु नामनी ।। टेर ।।

आ छे स्वार्थी ओ संसार, अेमां कंइ नथी सार ।
तारी काया तो छेवट राखनी......तूं तो......।।१।।

आतम-पंथने विकसावो, लेवा मुक्ति केरो ल्हावो ।
सांची भक्ति करीने जिनराजनी......तूं तो......।।२।।

मनवा मारु तारु मेल, मूको मनडानो मेल ।
तूं तो छोड दे फिकर आ संसारनी......तूं तो......।।३।।

जीवन जीववुं छे मारे, प्रभु-भक्तिना सथवारे ।
लगनी लागी छे संयम जीवननी......तूं तो......।।४।।

卐 जीवननी शुद्धि बिना 卐

(तर्ज—वफा जिनसे की..............)

जीवननी शुद्धि विना धरमं जे करे,
कहो तेनो धर्म तेने पार शुं करे ?

वैराग्य भाव विना दीधी ज़ेणे दीक्षा ।
उतारे ना हैये कदी, प्रभुजीनी शिक्षा,
वरसोना वरसो पाले, संयम ते भले,
कहो तेनो संयम तेने पार शुं करे ?....जीवन........ ।।१।।

श्रावकना व्रतो लीधां घणां वरसो पहेलां,
छतांये जुम्रो तो श्राजे मनडानां मेलां,
दुकाननां श्रड़े वेसी सहुने छेतरे,
कहो तेनां व्रतो तेने पार शुं करे ?........जीवन........ ।।२।।

उपाश्रयमां जइने करतो गुरुजीनां दर्शन,
छतांये सुधारे ना अेनुं जे वर्तन ।
ढोंगी छे धर्म केरो, जगत सहु कहे,
कहो तेनो धर्म तेने पार शुं करे ?........जीवन........ ।।३।।

नंदनवन समो श्रातम तारो,
उगारी तुं लेजे अेने गणी खूब प्यारो,
सम्यग् भावे सती सुनंद जे करे,
धन्य धन्य श्रातम तेनो, तारे ने तारे....जीवन........ ।।४।।

***

卐 सत्संगी बनो 卐

(तर्ज—कोई आज भजो..................)

सत्संगी बनो, सत्संगी बनो ।
निसंगी थवा, सत्संगी बनो..................।।

जीव अनादि कर्मनो संगी छे,
ने विषय - रंगनो रंगी छे,
हवे आत्मानंदे उमंगी बनो......निसंगी.......।।१।।

जीव पुदगलभावनो प्यासी छे,
संसारी सुखनो आसी छे,
हवे विरति - विलाना वासी बनो......निसंगी....।।२।।

जीव कंचन किर्त्तीनो कामी छे,
जडभावे चेतना जामी छे,
हवे शिवसदनना स्वामी बनो......निसंगी.......।।३।।

जीव सद्गुरु संगे जागे छे,
मोहभावनी मूर्छा त्यागे छे,
हवे सेवक सत्‌ना रागी बनो......निसंगी.......।।४।।

***

卐 मुक्ति तणा सपना 卐

(तर्ज—जब हम जवां होंगे ....)

मुक्ति तणा सपना, जोया घणा भवमां,
हवे आ भवे सपना बधा, साकार करी ले,
भवपार करी ले....... ।। टेर ।।

अगगमतो अंधकार गयो छे, जागी जा ।
झलहलतो अगसार थयो छे, जागी जा ।
अवसर ऊग्यो अेनो हवे सत्कार करी ले...भव....... ।।१।।

मानवनो अवतार मले छे सद्‌भाग्ये ।
धर्म तणो आधार मले छे सद्‌भाग्ये ।
साचा गुरु केरो हवे सत्कार करी ले...भव....... ।।२।।

भोग अने भोजन मल्या छे भव-भवमां ।
त्याग अने संयम मल्या छे आ भवमां ।
मनने मनावीने हवे तैयार करी ले...भव....... ।।३।।

तारी पासे साव किनारो आव्यो छे ।
हंकारी दे नाव इशारो लाव्यो छे ।
कांठे पहोंचीने विजय टंकार करी ले...भव....... ।।४।।

卐 आ दिवस पण चाल्या जशे 卐

(तर्ज—मैं पल दो पल का..........)

आ दुःख ते अेवं कयुं दुःख छे ?
तमे अेनाथी कां गभराओ,
आ दिवसो पण चाल्या जशे,
तमे हिंमत ना हारी जाओ ।। टेर ।।

तमे जोशो तो आ दुनियामां, दुःखिया जीवोनो पार नथी,
नीचे धरती ने आभ छे ऊपर, बीजो कोई आधार नथी ।
तो पण अे लोको जीवे छे, अरे ! हसता हसता जीवे छे,
ने एक तमे पण मानव छो, जे थोडा दुःख थी बीवो छे ।
आ दिवसो पण...........।।१।।

धसमसती गांडी नदीओनां, पाणी पण अंते उतरे छे,
वावाझोठाना उधमाता, वंटोला अंते विरमे छे ।
अेम दुःखना दाडा वही जशे, जोता २ मां वही जशे,
जे धा पड्या छे हैयामां, अे घा पण हलवो थई जशे ।
आ दिवसो पण...........।।२।।

तमे जाणी ल्यो के जीवनमां, आ दुःखडा शाने आवे छे,
कोई बुरा कर्म कर्या पूर्वे ते दुःखने खेंची लावे छे ।
हवे मन वाणी ने काया ने, सत्कार्यो साथे जोडी दो,
जे दुःख आव्युं छे अे मारे, संताप हवे तो छोडी दो ।
आ दिवसो पण...........।।३।।

❋

❋❋❋❋❋

卐 आटलुं तो आपजे भगवान 卐

(अन्तिम भावना)

आटलुं तो आपजे भगवान ! मने छेल्ली घडी ।
ना रहे माया तणा बंधन मने छेल्ली घडी.......

आ जिंदगी मोंघी मली पण, जीवनमां जाग्यो नथी ।
अंतसमये मने रहे, साची समझ छेल्ली घडी.......

ज्यारे मरणशय्या परे, मिचाय छेल्ली आंखडी ।
तुं आपजे त्यारे प्रभुमय मन मने छेल्ली घडी.......

हाथ पग निर्बल बने ने श्वास छेल्लो संचरे ।
ओ दयालु ! आपजे दर्शन मने छेल्ली घडी.......

हुं जीवन भर सलगी रह्यो, संसारना संतापमां ।
तुं आपजे शान्तिभरी शक्ति मने छेल्ली घडी.......

अगणित अधर्मो में कर्या, तन मन वचन योगे करी ।
हे क्षमासागर ! क्षमा मने आपजे छेल्ली घडी.......

अंत समये आवी मुझने ना दमे षट दुश्मनो ।
जाग्रत पणे मनमां रहे, तारू स्मरण छेल्ली घडी.......

*
***

卐 आंतर चक्षु खुलशे 卐

(तर्ज—बाबुल की दुआ तू ....)

तारा आतम घर मां शोध करे,
तो सफल तारा अवतार बने।
अज्ञान - अंधेरा दूर करे,
तो ज्ञानप्रकाश बाहर खिले ॥ टेर ॥

जीवन तारुं चाल्युं वेगे, पल-पलनो तूं हिसाब करे।
बचपन चाल्युं लाडे कोडे, युवानी मां तूं मौज करे।
हवे वृद्ध अवस्था आवी रही, तूं कांई हवे विचार करे।
............तारा............॥१॥

अज्ञाननी घेरी उगी निराशा, तेमां क्यांथी तने प्रकाश मले।
सत्य समझनी पामे जो दिशा, तो सम्यक् रत्न आवी मले।
तूं करजे सार्थक तारो जीवन, उठ ! जाग हवे प्रभात खिले।
............तारा............॥२॥

परभवनी प्रीतने परिहरजे, तूं शुद्ध स्वभावमां थिर बनी।
आंतर चक्षु खुलशे तारा, तने झलहल केवलज्ञान मले।
"सति सुनंद" चाहे तारुं शरण, मारी नैया भवजल
पार तरे............तारा............॥३॥

**

卐 माँ-बापने भूलशो नहि 卐

(हरिगीत)

भूलो भले बीजु बधु माँ-बापने भूलशो नहि ।
अगणित छे उपकार अेना, अेह विसरशो नहि.......

पत्थर पूज्या पृथ्वीतणा, त्यारे दीठु तम मुखडु ।
अे पुनित जननां कालजा, पथ्थर बनी छुंदशो नहि ।। १ ।।

काढी मुखेथी कोलिया, मोंमां दई मोटा कर्या ।
अमृततणा देनार सामे जहर उगलशो नहि ।। २ ।।

लाखो लडाव्यां लाड तमने, कोड सौ पूरां कर्या ।
अे कोड पूरनारना कोड पूरवा भूलशो नहि ।। ३ ।।

लाखो कमाता हो भले, माँ-बाप जेना ना कर्या ।
अे लाख नहि पण राख छे, अे मानवु भूलशो नहि ।। ४ ।।

संतानथी सेवा चहो, संतान छो सेवा करो ।
जेवु करो तेवु भरो, अे भावना भूलशो नहि ।। ५ ।।

भीने सुई पोते अने सूके सुवाडया आपने ।
अेनी अमीमय आंखने, भूलीने भींजवशो नहि ।। ६ ।।

पुष्पो बिछाव्या प्रेम थी, जेने तमारा राह पर ।
अे राहबरना राह पर, कंटक कदी बनशो नहि ।। ७ ।।

धन खरचतां मलशे बधु, माता-पिता मलशे नहि ।
जगजीवन अेना चरणनी, चाहना भूलशो नहि ।। ८ ।।

卐 अन्त समयनी भावना 卐

भक्ति करता छूटे मारा प्राण प्रभुजी एवं मांगु छुं,
रहे जनम जनम तारो साथ, प्रभुजी अेहवी आशा धरुं ।।

तारुं मुखडु मनोहर जोया करुं,
रात - दिवस रटन तारुं कर्या करुं,
श्वासे श्वासे रहे तारुं नाम प्रभुजी.......।।१।।

मारी आशा निराशा करशो नहीं,
मारा अवगुण हैयामां धरशो नहीं,
रहे अंत समय तारुं ध्यान प्रभुजी.......।।२।।

तारा भक्तिनो रंग मने लागी गयो,
भय जनम-जनमनो भागी गयो,
दौडी आवुं छु तारे द्वार प्रभुजी.......।।३।।

मारा पाप ने ताप समावी लीजो,
तारे साधकने दास बनावी लीजो,
दीजो आवीने दर्शननां दान प्रभुजी.......।।४।।

नित सुमरण हृदयमां अवधारया करुं,
रात-दहाडो भजन तारो बोल्या करुं,
रहे चरणकमलमां ध्यान प्रभुजी.......।।५।।

卐 चेतन चालो रे हवे 卐

(तर्ज—हंसला हालो रे...............)

चेतन चालो रे हवे, सुख नहि परमां मले,
आ तो सागरना पानी, तृष्णा नहि रे छीपाणी,
तृप्ति नहि रे मले......चेतन.......॥१॥

जड ने चैतन्यती प्रीति रे पुराणी,
अनंत जन्मरामां करी शुं कमाणी,
मति मायामां मुंझाणी, आत्मशक्ति रे लुंटाणी
शांति नहि रे मले......चेतन......॥२॥

भवरे सागरमां डूबवाने लाग्यो,
डूबतांने संते आवीने उगार्यो,
हतो स्वरूपथी अजान, तेनी करावी पिछान
भवथी मुक्ति रे मले......चेतन.......॥३॥

भव्य आत्मा जागे अने तालावेली लागे,
प्रभु केरा पंथे कदम भरतो रे आगे,
चाहे "लीलम सती" स्व-स्वरूपनी रति,
शाश्वत सिद्धि रे मले......चेतन.......॥४॥

चेतन चालो रे हवे, साचुं सुख अहीं रे मले.......

हेम की हसित लहरें

पंजाबी-विभाग

卐 हमारे गुरुजी 卐

(तर्ज—मेरे अंगने में...............)

हो गए न दर्श, तुम्हारे गुरुजी ।
खुल गए न भाग्य, हमारे गुरुजी ।।टेर।।

तुम तो गुरुजी हमारे ब्रह्मा और विष्णु ।
हम तो हैं सेवक तुम्हारे गुरुजी ।।१।।

तुम तो गुरुजी हमारे माता और पिता ।
हम तो हैं बालक तुम्हारे गुरुजी ।।२।।

तुम तो गुरुजी हमारे चन्दा और सूरज ।
हम तो हैं छोटे सितारे गुरुजी ।।३।।

तुम तो गुरुजी हमारे गंगा और जमुना ।
हम तो हैं छोटे-से नाले गुरुजी ।।४।।

卐 ओ मना याद रखीं 卐

(तर्ज—मैनूं रब्ब दी सौं तेरे..............)

बिना प्रभु दे तूं होर नाल प्यार न करीं,
ओ मना याद रखीं ।
सोना छड के तूं मिटी दा व्यापार न करीं,
ओ मना याद रखीं ।

कोई मन्दा बोल बोले, अग्गों बोली नां, हां.......,
देखी वन्दा होके गंदगी, फरोली नां, हां.......।
कौडी तकरीर नाल तकरार न करीं, ओ.......।।१।।

गेडे मुडके चौरासियां दे खाई नां, हां.......,
ऐहो वेलाई सुनहरी चुक जाई नां, हां.......।
देखीं अपने उद्धार दा उधार न करीं, ओ.......।।२।।

घर घर जे तूं ओदा घर वेखना हां.......,
जो तूं हर एक बिच हर देखना हां.......।
फिर खुदी नूं तूं खुद मुख्त्यार न करीं, ओ.......।।३।।

जे तूं नेडे जाना चाहे भगवान दे हां.......,
पंजां वैरियां नूं नेड़े भी न आन दे, हां.......।
काम क्रोध मोह लोभ ते हंकार न करीं, ओ.......।।४।।

गल्लां मेरियां नूं पल्ले वन्नो कस्स के, हां.......,
फेर आन भगवान छेती नस्स के, हां.......।
फिर 'नत्थासिंह' उत्ते एतबार न करीं, ओ.......।।५।।

※

※※※

卐 चैन पा सकता नहीं 卐

(तर्ज—मिट नहीं सकता कभी..................)

दिल दुखा कर गैर का तू चैन पा सकता नहीं।
पेड बीज बबूल के तू आम खा सकता नहीं ।।टेर।।

आग लकड़ी को लगाने, तीली माचिस की चली।
लकड़ी के जलने से पहिले आप ही मूरख जली।
दिल दुखा कर कमल का, रवि नभ पर छा सकता नहीं ।।१।।

काट देती है गला जो आन ही की आन में।
वह खड्ग भी कैद रहती है सदा ही म्यान में।
टूट जाता चुभ के कांटा, खुशी मना सकता नहीं ।।२।।

झुलस परवाने को प्यारे, दीप भी जलता रहा।
गर्क कर मुसाफिरों को, नाव भी डूबी अहा।
नाश कर तारों को, सूरज शांति पा सकता नहीं ।।३।।

卐 दिल नूं दुखाई नां 卐

(तर्ज—सारी सारी रात तेरी...............)

रब नूं जे पानां किसे दिल नूं दुखाई नां।
दिल नूं दुखाईं नां ते किसे नूं सताईं नां ।।टेर।।

निन्दया पराई कदे जीभ ते लिआईं नां।
रोन्दे नूं हंसाईं, कदे हसदा रुआईं नां।।
हसदा रुआईं ना कोई जिन्दा तडफाईं नां ।।१।।

छेड छेड छेडा कलां सुनियां जगाईं नां।
लग्गी नूं बुझाईं पर हत्थीं कदे लाईं नां।।
हत्थीं कदे लाईं ना ते जुल्म कमाईं नां ।।२।।

गिरे नूं उठाईं "कोमल" उठदा गिराईं नां।
बन्धे नूं छुडाईं पर किसे न बन्धाईं नां।।
किसे नूं बंधाईं ना ते बेडी कदे पाईं नां ।।३।।

卐 मन मेरा लगा रहे 卐

(तर्ज—मेरा मन मंगदाए हरया...............)

लगा रहे प्रभु चरणां दे नाल, मन मेरा लगा रहे ।।टेर।।

घर विच होवे खज़ाना शाही, नौकर चाकर दूध मलाई ।
भामें होवां कंगाल ।। मन.......।।१।।

धीयां पुत्र कुटुम्ब कबीला, भामें होवे बड़ा वसीला ।
भामें मन्दा हाल ।। मन.......।।२।।

भामें रेशम पहन हंडावां, भामें गुदड़ी लीरां पावां ।
भामें रुखा दी छाल ।। मन.......।।३।।

रस भरियां मिठाईयां खावां, छत्ती पदार्थ रसना लामां ।
भामें साग उबाल ।। मन.......।।४।।

राज भवन सुख महल अटारी, भामें रात गुजारां उजाड़ी ।
जपां प्रभु मन नाल ।। मन.......।।५।।

卐 उठ जाग जिन्दड़िये 卐

उठ जाग सवेरे नी ज़िन्दडिये, सुन सतगुरु दी वाणी ।
हुन सत्संग कर ले नी जिन्दडिये मौज बहुतेरी माणी ।।टेर।।

इस जीवन में धर्म न कीता, न कोई पुण्य कमाया……ओ……,
कर कर बदियां तूं दिन रातीं हीरा जनम गंवाया ।
यम ऐसे मारनगे जिन्दडिये, पीन न देंगे पाणी ।।१।।

न रहे छोटे न रहे मोटे, न रहे राजे राणे……ओ……,
चार दिहाडे हस्स खेडके, कर गये कूच मकाने ।
तूं एं टुर जाना नी जिन्दडिये, ज्यूं नहरां दा पाणी ।।२।।

मैं पन दिल तो दूर हटाके, कर सन्तां दी सेवा……ओ……,
सेवा करने से ही मिलता, तीन लोक दा मेवा ।
तूं ऐसे झुकजानी जिन्दडिये, ज्यों तू तां दी टहणी ।।३।।

卐 गुरां दे दर्शन नूं 卐

तरस रहा, दिल मेरा, गुरां दे दर्शन नूं ।।टेर।।

सत्गुरु मेरे पर उपकारी, आशा तृष्णा मनो बिसारी ।
कर दे धर्म - प्रचार गुरां दे ।।१।।

सब जीवां दी रक्षा करदे, अपना चित्त धर्म में धरदे ।
बेडा कीता पार गुरां दे ।।२।।

अमृत वरगी कथा सुनावन, सत्य धर्म दा राह दिखावन ।
मैं जीवां बलिहार गुरां दे ।।३।।

पंच महाव्रत पालन वाले, भक्त जनां नूं तारण वाले ।
ज्ञान ध्यान भंडार गुरां दे ।।४।।

दर्शन जो सत्गुरां दे पावे, सौ प्राणी मुक्ति बीच जावे ।
मिल दा सुख अपार गुरां दे ।।५।।

उठ सवेरे उत्तम प्राणी, श्री सत्गुरु दी सुन ले वाणी ।
जन्म न बारंबार गुरां दे ।।६।।

सत्गुरु दीन दयाल, हमारे पापी जीव जगत से तारे ।
अमर चरण चित्तधार गुरां दे ।।७।।

***

卐 दर्श दिखा गुरु चल्ले 卐

आये सी गुरुवर प्यारे दर्श दिखा के चल्ले ।
वाणी मनोहर अपनी सबनूं सुना के चल्ले ।।टेर।।

जोरु जमीन जरदे त्यागी ने डेरे दरदे ।
सच्चा उपदेश करके जग नूं जगा के चल्ले ।।१।।

हर पासे पिंडी शहरीं, टुर टुर के जांदे पैरीं ।
सर्दी गर्मी दे सारे ख्याल भुला के चल्ले ।।२।।

हुक्के नूं हत्थ न लांदे, सुल्फे तों नफरत खांदे ।
कईयां नूं मदिरा बीडी सिगरेट छुडा के चल्ले ।।३।।

चोरी शराब छड्डो, जुआ कबाब छड्डो ।
मारो न चींटी नूं वी धर्म बता के चल्ले ।।४।।

रोटी तां की सी खानी, पींदे न रात नूं पानी ।
सच्ची सुना के वाणी अमृत बरसा के चल्ले ।।५।।

साडी है किस्मत जागी, आए जो गुरुवर त्यागी ।
पाठ अहिंसा "चन्दन" सब नूं पढा के चल्ले ।।६।।

卐 धूली सन्ता दी 卐

चूम चट्टके मत्थे नाल लामां धूली सन्ता दी ।
मैं आप धूल बन जायां, धूली सन्ता दी ।। टेर ।।

धूल नहीं यह दिव्य अंजन है ।
नी मैं भर-भर सलाइयां पामां धूली.......।। १ ।।

धूल नहीं यह चन्दन केसर ।
नी मैं कस कस मत्थे नाल लामां धूली.......।। २ ।।

धूल नहीं यह अमृत बूटी ।
नी मैं घोल घोल पी जामां धूली.......।। ३ ।।

धूल नहीं यह गंगा जल है ।
नी मैं रज्ज रज्ज के डुबकियां लामां धूली....।। ४ ।।

सन्त नहीं, ए कल्प वृक्ष हैं ।
नी मैं मनवंछित फल पामां धूली.......।। ५ ।।

卐 प्रणाम–वीरां नूं 卐

(तर्ज—रेशमी सलवार..............)

लख बारी प्रणाम ओन्हां वीरां नूं ।
देश धर्म ने लाया जिन्हां शरीरां नूं ।। टेर ।।

धर्म दी खातिर वन वन कष्ट उठाए सी ।
राम लखन दो भाई भारत जाए सी ।।

कर्मयोग अर्जुन को पाठ पढाया सी ।
श्री कृष्णजी गीता ज्ञान सुनाया सी ।।

अहिंसा का झण्डा जीहदा सहारा सी ।
शांति का अवतार ओ वीर पियारा सी ।।

भारत में जब जोर जुल्म दा छाया सी ।
प्रभु वीर ने सोया देश जगाया सी ।।

सीतां जहियां सतवंतियां होइयां नारां ने ।
धर्म दी खातिर फिरियां विच उजाडां ने ।।

राजमती और चन्दनां इक मसालां नें ।
पद्मनी जैसी जलियां विच मसानां नें ।।

गुरु गोविन्दसिंग भारत मां दे तारे सी ।
देश दी खातिर चारों बेटे वारे सी ।।

भारत मां जद रोंदी ते कुरलांदी सी ।
श्री महावीर संदेश ल्याया गांधी सी ।।

※
※※※※
※

卐 टप्पे 卐

(तर्ज—तुम रुठ के मत..................)

सत्गुरु तारणहारे ने साडे कोलों विछुड चले।
लोकी रोंदे सारे ने॥

सत्गुरु जित्थे जित्थे जांदे ने,
पापीयां पुरुषां नु राह धर्म दी पांदे ने।

सत्गुरु ब्रह्मज्ञानी यें,
सुन सुन रजंदा नहीं मन अमृत वाणी ए।

नितधर्म सुनाया ए,
साडी इस नगरी नु ओना स्वर्ग बनाया ए।

सत्गुरु बेनती साडी ए,
कुछ दिन ठहर जाओ धुप्प हाड दी डाडी ए।

कुछ ठण्डी ठण्डी थां होवे,
जदों गुरुदेव चलन ओदो बदला दी छां होवे।

सत्गुरु फिर कद आवोगे,
अपनीयां संगतां नूं कद दर्श दिखाओगे।

सिर चरणां ते धरणी हां,
सत्गुरु बख्श देयो पई अर्जां करनी हां।

साडी भूल नु भुला केते,
दर्शन दयो सत्गुरु, फेर एत्थे ओके ते।

卐 देवाधिदेव महावीर 卐

देवाधिदेव मेरे, चरण पड़ूं मैं तेरे ऽऽ ।
काटो चौरासी फेरे, मुक्ति के दाता महाऽऽवीरजी ।।

कुण्डलपुर में जन्म लिया, त्रिशला माता के जाए,
सिद्धार्थनु देन बधाइयां, देव देवियां आए ।
खुशिया ने चार चपेरे, उठ गए डेरे,
कि कि गुण गांवा तेरे, मुक्ति के दाता महावीर....।। १ ।।

सत्य अहिंसा का दुनिया को, तूने पाठ पढाया,
स्याद्वाद का झण्डा ऊँचा, दुनिया दे वीच लाया ।
किते उपकार बथेरे, तारे जी पापी मेरे,
कि कि गुण .... ।। २ ।।

मन्त्र दे नवकार प्रभु ने चण्डकौशिक तारा,
चन्दनबाला अवला का भी, तूने कष्ट निवारा ।
"वी० एल० बलिहारें तेरे, करलो सेवक ने नेरे,
कि कि गुण .... ।। ३ ।।

#卐 परमात्मा 卐

तेनु ना विसारा, सारे जग नु विसारा।
तन, मन, धन सारा तेरे उतो वारा ।।टेर।।

एनी कु शक्ति मेनु दइयो परमात्मा,
जेडा वेला आवे ओनु हंसके गुजारा।
तेनु ना................ ।।१।।

दिना अनाथां दी पुकार सुनन वालिया,
कदों तक सुनेगा तू मेरिया पुकारा।
तेनु ना................ ।।२।।

सुखां देवे ले कदी याद बिना कि थांसी,
दुःखां रे वेले तेनु अवा पइ मारा।
तेनु ना................ ।।३।।

तेरा दर असा नहीं ओ छड ना परमात्मा,
लगी हुई बाजी पावे, जीतां पावे हारा।
तेनु ना................ ।।४।।

卐 गुरां दी वाणी 卐
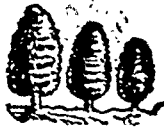
मिठी लगदी गुरां दी वाणी, ओ वेले अमृत दे ।।टेर।।

पुण्य जन्म जन्म दा होवे, तां दर्श गुरां दा होवे ।
ते मुक्ति दी राह लभदी ......।।१।।

जिनु ज्ञान अन्दर हो जावे, औनु डर न मौत दा आवे ।
ओ मिट जांदी भूख जगदी.......।।२।।

मुक जांदियां चौरासी दियां वाटां, वुझ जांदियां पाप दिया लाटां ।
आनन्द वाली गंग वगदी.......।।३।।

सुन सुन के गुरां दी वाणी, लखां तर गए जगत दे प्राणी ।
सच्ची मुच्ची सोंख्व दी.......।।४।।

卐 सत्संग 卐

कर सत्संग उठ सवेरे, मिलना जे प्रीतम प्यारे।
पाना जे मुक्ति द्वारे नूं ।।टेर।।

सत्संग बिच मोती हीरे ने पर मिलते धीरे धीरे ने।
आजा सत्संग दे नेडे······ ।।१।।

सत्संग ही ज्ञान सिखांदा ए, जन्मां दे भरम मिटांदा ए।
हो अन्दर चानन तेरे······ ।।२।।

जब कर्मां दा फल पाना ए, तेरा किसे न बोझ उठाना ए।
करनी दे होन न बेडे······ ।।३।।

जो वक्त गया नहीं आयेगा, फिर हत्थ मल २ पछताएगा।
जब द्वार यमां ने घेरे······ ।।४।।

जप तप न धर्म कमाया ए, न दर्शन सतगुरु पाया ए।
भटकेगा बिच अन्धेरे······ ।।५।।

हेम की हसित लहरें

अंग्रेजी-विभाग

卐 टेम्पल गोन टू 卐

(तर्ज—अंग्रेजी में कहते हैं...............)

अंग्रेजी में कहते हैं कि टेम्पल गोन टू,
गुजराती में कहते हैं देरासर जाऊँ छूं।
मारवाड़ी में कहते हैं मन्दिर जाऊँ सा,
पंजाबी में कहते हैं सुनो जी मन्दिर जाना है।
दर्शन करना है, पार उतरना है, हो साथी हो,
अंग्रेजी............... ।।१।।

बात सुनो ये राईट, कितनी सुन्दर है नाईट,
मनवा यू करे फ्लाईट, मुखड़ा प्रभु का ब्राईट।
देखो मन्दिर की ये ब्यूटी, दुनिया सारी है झूठी,
और कहीं ना जाओ ये है तुम्हारी ड्यूटी।
अंग्रेजी............... ।।२।।

आई एम युवर गाईड, बात करो मेरी माइण्ड,
सच कहता हूँ ब्रादर मन्दिर मोक्षपुरी का पाईन्ट।
टेम्पल में गॉड सिटिंग, माय हार्ट करे बीटींग,
अनोखी सांग सिगींग, अनोखी बात थिंकिग।
अंग्रेजी............... ।।३।।

卐 नो इक्वल प्रभुजी 卐

नो इक्वल आय एम यू प्रभुजी नो इक्वल,
यू वीतरागी आय एम रागी, कैसे करुं फ्रेंडशिप।
प्रभुजी नो.................. ॥१॥

यू आर ट्रुथ आय एम झूठ, वाट इज दिस माय।
पॉजीशन प्रभुजी नो.................. ॥२॥

यू आर सिटिंग मुक्ति नगरिया, आय एम लिविंग संसार।
प्रभुजी नो.................. ॥३॥

यू आर किंग ऑफ स्वर्ग नगरिया, आय एम लिटिल मेन।
प्रभुजी नो.................. ॥४॥

"मंडल विचक्षण" कम यूवर डोर, आय एम रिक्वेस्टींग।
प्रभुजी नो.................. ॥५॥
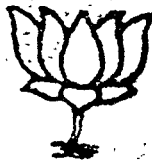
卐 गॉड महावीर 卐

(तर्ज—तुम्हीं मेरे मन्दिर..................)

अवर गॉड इज महावीर, अवर स्ट्रेन्थ इज ही।
विदाउट महावीरा, नथिंग इन द वर्ल्ड ॥
अवर हार्ट इज ही, गॉड ऑफ द गॉड ही।
विदाउट महावीरा........ ....॥१॥

नो मदर फादर एण्ड नो सन डॉटर।
फैथलेस इज द वर्ल्ड अलीएन्स ॥
सोल कम्स लोनली एण्ड, गोज बाइ वन सेल्फ।
वाई आर यू बीइन्ग एन अनहोली परसन ॥
अवर गॉड..................॥२॥

बाइ इग्नोरन्स ग्रीड वी गेट द ट्रबल।
देन अगैन हार्ड टू मेक नथिंग किल आफ दीस ॥
द क्राउड आफ वर्ल्ड इज अन् त्रू एडो।
वाई आर यू इटींग साल्टी फ्रूट आफ इविल ॥
अवर गॉड ....॥३॥